वर्ष-11 अंक-53 पृष्ठ-8 मूल्यः 3 रुपये

प्रयागराज, गुरुवार 01 मई 2025

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रसारित

Download From Google Play

Adhunik Samachar

आधुनिक समाचार नेटवर्क

11 YEARS ANNIVERSARY

संक्षिप्त समाचार

ब्रिटिश संसद में उठा पहलगाम हमले का मुद्दा, ब्रिटेन ने भारत-पाकिस्तान से की शांति की अपील

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भयानक आतंकवादी हमले का मुद्दा मंगलवार को ब्रिटिश संसद में भी उठा। कई ब्रिटिश सांसदों ने इस हमले की निंदा की और ब्रिटिश सरकार से पूछा कि क्या ब्रिटेन इस हमले के दोषियों को न्याय के कटघरे में लाने के लिए भारत का समर्थन करेगा। इसके जवाब में ब्रिटिश सरकार ने भारत-पाकिस्तान में बढ़ते तनाव के बीच दोनों देशों से शांति बनाए रखने की अपील की। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भयानक आतंकवादी हमले का मुद्दा मंगलवार को ब्रिटिश संसद-हाउस ऑफ कॉमन्स में भी उठा। इस हमले के बाद भारत और पाकिस्तान में बढ़ते तनाव के बीच ब्रिटेन सरकार ने दोनों देशों से शांति बनाए रखने और बातचीत करने की अपील की। ब्रिटेन के विदेश कार्यालय मंत्री हामिश फाल्कन ने ब्रिटिश सिख लेबर सांसद गुरिंदर सिंह जोसन के प्रश्न का जवाब दिया, जिसमें उन्होंने पूछा था कि क्या ब्रिटेन इस हमले के दोषियों को न्याय के कटघरे में लाने के लिए भारत का समर्थन करेगा। जवाब में फाल्कनर ने कहा कि वह 22 अप्रैल को जम्मू एवं कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकवादी हमले से बेहद दुखी हैं। ये हमला विनाशकारी था। उन्होंने कहा, 'हम सभी पक्षों, सभी समुदाय के नेताओं और इसमें शामिल सभी लोगों से क्षेत्र में तनाव के समय शांति बनाए रखने की अपील करते हैं।'फाल्कनर ने आगे कहा कि भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव ब्रिटेन की सड़कों पर भी दिख रहा है, जहां विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। कुछ मामलों में हिंसा या धमकी भरे व्यवहार भी सामने आए हैं।

देशरत्न की धरती के लाल नर्मदेश्वर तिवारी संभालेंगे वायुसेना उप प्रमुख का पद, बिहार गौरवान्वित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के बाद पूरे देश की नजर तीनों सेनाओं पर है। ऐसे में मंगलवार रात जब भारतीय वायुसेना के उप प्रमुख के रूप में नर्मदेश्वर तिवारी के नाम की घोषणा हुई तो देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद की धरती एक बार फिर गौरवान्वित हुई। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद पूरे देश के साथ दुनिया की नजर भारत की तीनों सेनाओं पर है। पहली जिम्मेदारी वायुसेना निभाती है, इसलिए उसपर नजर सभी की है। ऐसे में मंगलवार देर रात भारतीय वायुसेना के उप प्रमुख, यानी वाइस चीफ ऑफ एयर फोर्स के रूप में नर्मदेश्वर तिवारी का नाम आते ही बिहार के लोग रोमांचित हो उठे। देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद की धरती सीवान के लाल नर्मदेश्वर तिवारी पहलगाम हमले के बाद अहम भूमिका में आए तो उनके गांव में एक तरह का जश्न हो गया। रोमांचित लोगों ने कहा कि अब दुश्मन देश के छक्के छूटेंगे। सीवान देशरत्न राजेंद्र बाबू की धरती रही

है। इस धरती से एक नाम मंगलवार रात से सुर्खियों में है। भारतीय वायु सेना में सीवान जिले के गुठनी थाना क्षेत्र के सिकलपुर गांव के रहने वाले नर्मदेश्वर तिवारी को वायु सेना में वाइस चीफ बनाया गया है। जैसे ही यह खबर गांव वालों को लगी पूरा गांव खुशी से झूम उठा। दूर-दूर के लोग भी इनके परिवार से मिलने का रहे हैं। बधाइयों का तांता लगा तो लगा ही है, लोग यह भी कह रहे हैं कि अब भारत के दुश्मनों से बदला लेने में बिहार की अहम भूमिका होगी। बताया जा रहा है कि नर्मदेश्वर तिवारी 1 मई को जॉइन करेंगे। बुधवार 30 अप्रैल को एयर मार्शल सुजीत पुष्पकर धारकर के रिटायर होने के बाद नर्मदेश्वर तिवारी नई जिम्मेदारी संभालेंगे। सुजीत पुष्कर धारकर 40 वर्ष से ज्यादा सेवा देने के बाद रिटायर हो रहे हैं। इसी महीने की 22 तारीख को पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था, जिसमे 26 आम लोगों को आतंकियों ने मार डाला था। इस हमले में पड़ोसी देश पाकिस्तान का हाथ माना जा रहा है। पूरे देश में सरकार के साथ साथ विपक्ष भी एक सुर में इस घटना निंदा कर सख्त कार्रवाई की मांग कर रहा है। बॉर्डर पर स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है। भारत सरकार लगातार आतंकियों से निपटने के लिए कदम उठा रही है। पाकिस्तान को सिंधु नदी से पानी रोक दिया गया है। अब इस बीच सीवान के लाल को यह पद दिया गया है, जिस से बिहार गौरवान्वित है।

हाई प्रोफाइल व्यक्ति ने मेरे रंग को लेकर अपमानजनक टिप्पणी की

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। शारदा मुरलीधरन ने कहा कि उनके रंग पर टिप्पणी करने वाला एक हाई प्रोफाइल व्यक्ति है, लेकिन उन्होंने ये बताने से इनकार कर दिया कि वह कोई राजनेता है या शीर्ष अधिकारी और न ही उसके

नाम का खुलासा किया। केरल की मुख्य सचिव शारदा मुरलीधरन ने मंगलवार को बताया कि एक हाई प्रोफाइल व्यक्ति ने उनके रंग को लेकर अपमानजनक टिप्पणी की थी। हालांकि मुख्य सचिव ने उस व्यक्ति का नाम बताने से इनकार कर दिया। बीते दिनों मुख्य सचिव शारदा मुरलीधरन ने सोशल मीडिया पर इसे लेकर लंबा चौड़ा पोस्ट भी लिखा था, जिस पर लोगों ने उन्हें समर्थन भी दिया था। शारदा मुरलीधरन का बतौर मुख्य सचिव कार्यकाल 30 अप्रैल को समाप्त हो रहा है। मंगलवार को अपने रिटायरमेंट से पहले एक मीडिया चैनल के साथ बातचीत में शारदा मुरलीधरन ने बताया कि त्वचा के रंग को लेकर लोगों के मन में आज भी भेदभाव है। यह काले रंग के प्रति व्यवहार का मुद्दा है। शारदा मुरलीधरन ने कहा कि उनके रंग पर टिप्पणी करने वाला एक हाई प्रोफाइल व्यक्ति है, लेकिन उन्होंने ये बताने से इनकार कर दिया कि वह कोई राजनेता है या शीर्ष अधिकारी और न ही उसके नाम का खुलासा किया। मुख्य सचिव ने बताया कि उनके काम की तुलना उनके पति और पूर्ववर्ती वी वेणु के काम से की गई थी। जिसमें कहा गया था कि, 'मेरा कार्यकाल उतना ही काला है, जितना मेरे पति का कार्यकाल सफेद रहा था।' उन्होंने ये भी कहा कि 'उस हाई प्रोफाइल व्यक्ति ने अपनी टिप्पणी पर अफसोस भी नहीं जताया। हम दोनों में अभी भी बातचीत होती है, लेकिन उस व्यक्ति ने कभी भी उस मुद्दे पर बात नहीं की।' शारदा मुरलीधरन की जगह अब ए जयतिलक केरल के नए मुख्य सचिव होंगे।

पूर्व पुलिस कांस्टेबल ने पास की यूपीएससी परीक्षा, अखिल भारतीय रैंक 350

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

आंध्र प्रदेश । आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, कांस्टेबल से आईपीएस अधिकारी बनने तक की उदय कृष्णा रेड्डी की यात्रा दिखाती है कि साहस और कड़ी मेहनत से कोई भी सपना साकार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि भविष्य उनका है जो कभी हार नहीं मानते। 19 साल की उम्र में

2013 में कांस्टेबल बने रेड्डी अनाथ थे और उनका पालन-पोषण उनकी दादी रमनम्मा और चाचा कोटि रेड्डी ने किया। रेड्डी ने बताया, मैं हमेशा से यूपीएससी की तैयारी करना चाहता था, लेकिन माता-पिता के न होने के कारण पहले नौकरी करनी पड़ी। हालांकि, नौकरी के चलते पढ़ाई के लिए समय नहीं मिल पाता था। तैयारी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए रेड्डी ने 2019 में नौकरी छोड़ दी। पहले प्रयास में वह इंटरव्यू तक पहुंचे, लेकिन सिर्फ 9 अंकों से चूक गए। कोविड 19 महामारी की चलते उनकी तैयारी प्रभावित हुई, लेकिन 2023 में उन्होंने 780वीं रैंक हासिल कर इंडियन रेलवे मैनेजमेंट सर्विस में नौकरी पाई। इस साल उन्होंने फिर परीक्षा दी और 350वीं रैंक हासिल की। रेड्डी ने बताया कि कांस्टेबल रहते हुए एक सर्किल इंस्पेक्टर ने उन्हें प्रताड़ित किया, लेकिन इससे उनका हौसला और मजबूत हुआ।

रेड्डी की यात्रा दिखाती है कि साहस और कड़ी मेहनत से कोई भी सपना साकार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि भविष्य उनका है जो कभी हार नहीं मानते आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने मंगलवार को पूर्व पुलिस कांस्टेबल एम. उदय कृष्णा रेड्डी को उनकी संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में 350वीं रैंक हासिल करने पर बधाई दी। रेड्डी अब आईपीएस अधिकारी बनने की राह पर हैं। नायडू ने कहा कि रेड्डी की कहानी साबित करती है कि दृढ़ संकल्प से हर बाधा पार की जा सकती है।नायडू ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, कांस्टेबल से आईपीएस

विशाखापत्तनम में चंदनोत्सवम के दौरान भीषण हादसा; 20 फीट लंबी दीवार गिरने से सात लोगों की मौत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

आंध्र प्रदेश । आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में श्री वराह लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर में चंदनोत्सव

के दौरान भीषण हादसा हो गया। यहां दीवार का 20 फीट लंबा हिस्सा गिरने से सात लोगों की मौत हो गई। साथ ही कई लोग घायल भी हो गए। की टीम मौके पर मौजूद है। राहत एवं बचाव अभियान जारी है। घटना के बारे में एसडीआरएफ के एक जवान ने बताया कि घटना रात करीब 2:30 बजे हई थी। घटना में 7 लोगों की मौत हो गई। 2 लोग घायल हैं जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है। एसडीआरएफ के जवान ने बताया कि जैसे ही हमें घटना की सूचना मिली हम लोग आनन-फानन में मौके पर पहुंचे और राहत-बचाव कार्य शुरू किया। वहीं, हादसे के बारे में भाजपा के पूर्व एमएलसी माधव ने भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है जो अक्षय तृतीया के अवसर पर घटी है। यह रात में 2.30 बजे हुई। सरकार घटना की जांच करेगी और पीड़ितों को मुआवजा देगी।

पहलगाम हमले के बाद आज केंद्रीय मंत्रिमंडल की पहली बैठक; पीएम मोदी ले सकते हैं कोई बड़ा निर्णय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद आज केंद्रीय मंत्रिमंडल की पहली

बैठक होगी। सूत्रों का दावा है कि पीएम मोदी इस बैठक में कोई बड़ा निर्णय ले सकते हैं। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पहली बार बुधवार को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को सुबह 11 बजे बैठक बुलाई गई है। पिछले सप्ताह केंद्रीय मंत्रिमंडल की कोई बैठक नहीं हुई थी और केवल सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) की 23 अप्रैल को बैठक हुई थी और उसने आतंकी हमले की निंदा की थी।इसके अलावा, आज सीसीएस की बैठक होगी। सूत्रों का कहना है कि सीसीएस की बैठक में आर या पार का निर्णय किया जा सकता है। इसीलिए सेना प्रमुखों के साथ पीएम ने बैठक की। दरअसल, सीसीएस में देश की सुरक्षा के संदर्भ में अहम निर्णय लिए जाते हैं।पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई कभी भी हो सकती है। सख्त कार्रवाई का सीधा संकेत देने के लिए ही पीएम ने सेना को खुली छूट दी। इसके लिए सेना ने कराची बंदरगाह का संपर्क काटने, पीओके में सीधा हमला बोलने सहित अन्य विकल्पों पर विस्तार से मंथन किया है। सैन्य कार्रवाई से पहले कूटनीतिक मोर्चे पर वैश्विक मंच पर पाकिस्तान को अलग-थलग करने की रणनीति बनाई गई है। इससे पहले पिछली सीसीएस की बैठक के बाद भारत ने पिछले बुधवार को पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंधों को कम करने सहित कई उपायों की घोषणा की थी। भारत ने पहलगाम आतंकवादी हमले के सीमापार संबंधों के मद्देनजर पाकिस्तानी सैन्य अताशे को निष्कासित करने, छह दशक से अधिक पुरानी सिंधु जल संधि को निलंबित करने और अटारी भूमि-पारगमन चौकी को तत्काल बंद करने की घोषणा की। गौरतलब है कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी। इस घटना में पाकिस्तान का हाथ होने की बात सामने आई है। भारत ने कुल चार आतंकियों में से दो के पाकिस्तानी होने का खुलासा किया है। भारत ने इस घटना के मद्देनजर पाकिस्तान पर एक के बाद एक कार्रवाई जारी रखी है और सिंधु जल समझौता तोड़ने के बाद सोमवार को पाकिस्तानी यूट्यूब चैनल्स से जुड़ी सामग्री को भी बैन करने का फैसला किया है।

द्विपक्षीय व्यापारिक साझेदारी में ठोस नतीजों की उम्मीद', ब्रिटेन दौरे के बाद पीयूष गोयल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को लंदन के लैंकेस्टर हाउस में आयोजित संयुक्त व्यापारिक स्वागत समारोह

में भाग लेकर ब्रिटेन की अपनी दो दिवसीय यात्रा पूरी की। इसके बाद उन्होंने कहा कि वे भारत और ब्रिटेन के बीच व्यापारिक साझेदारी में 'ठोस नतीजों' की उम्मीद कर रहे हैं। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को लंदन के लैंकेस्टर हाउस में आयोजित संयुक्त व्यापारिक स्वागत समारोह में भाग लेकर ब्रिटेन की अपनी दो दिवसीय यात्रा पूरी की। इस कार्यक्रम में गोयल के साथ ब्रिटेन के विदेश मंत्री डेविड लैमी और व्यापार मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स के अलावा दोनों देशों के वरिष्ठ व्यापारिक नेता भी शामिल हुए। इसके बाद गोयल ने कहा कि वे भारत और ब्रिटेन के बीच व्यापारिक साझेदारी में 'ठोस नतीजों' की उम्मीद कर रहे हैं। इसके बाद डाउनिंग स्ट्रीट में मंत्री गोयल की ब्रिटेन के व्यापार मंत्री रेनॉल्ड्स और चांसलर रेचेल रीव्स के साथ बंद कमरे में बैठकें हुईं। इस दौरान भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर मुख्य रूप से चर्चा की गई। संयुक्त व्यापारिक स्वागत समारोह के बाद पीयूष गोयल ने कहा, 'ब्रिटेन के व्यापार मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स के साथ सभा को संबोधित किया। हमने भारत-ब्रिटेन साझेदारी के उज्जवल भविष्य की बात की। हमारे यूके भागीदारों द्वारा दिए गए गर्मजोशी भरे और शानदार आतिथ्य के लिए मैं बेहद आभारी हूं। हमें उम्मीद है कि मिलकर किए गए काम के ठोस नतीजे सामने आएंगे।

दिमा हसाओ में उग्रवादियों से मुठभेड़, असम पुलिस और असम राइफल्स की संयुक्त कार्रवाई में तीन उग्रवादी ढेर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

असम। असम के दिमा हसाओ जिले में सुरक्षाबलों की कार्रवाई में तीन उग्रवादी मारे गए हैं। जानकारी के मुताबिक, सुरक्षाबलों ने सूचना के आधार पर कई इलाकों में सर्च ऑपरेशन चलाया था, जिस दौरान हथियारबंद उग्रवादियों से मुठभेड़ हुई। असम पुलिस और असम राइफल्स ने शनिवार शाम से चलाए जा रहे एक बड़े सर्च ऑपरेशन में तीन उग्रवादियों को मार गिराया। यह मुठभेड़ रविवार सुबह हुई जब सुरक्षा बलों की टीम को लगभग 60 घंटे की तलाशी के बाद हथियारबंद उग्रवादियों का एक समूह दिखाई दिया। यह मुठभेड़ एन. कुबिन और हेरा किलो इलाके के बीच हुई।असम पुलिस के सीपीआरओ राजीब

सैकिया ने जानकारी देते हुए बताया कि यह कार्रवाई उस सूचना के आधार पर शुरू की गई थी, जिसमें बताया गया था कि कुछ सशस्त्र उग्रवादी, जिन्होंने एनएचएआई (नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया) को रंगदारी की चिट्ठी दी थी, दिमा हसाओ जिले के कुछ इलाकों में छिपे हुए हैं।इन उग्रवादियों के छिपने की जानकारी हेरा किलो, एन. कुबिन, प. कुबिन, बरोचानाम, मिचिदुई, डोएरिंग और चाइकाम जैसे इलाकों से मिली थी, जो हाफलोंग पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आते हैं। इसी सूचना के आधार पर असम पुलिस की विशेष इकाइयों और असम राइफल्स की संयुक्त टीमों ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया रविवार सुबह उग्रवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई, जिसमें दोनों ओर से भारी गोलीबारी हुई।

दिल्ली टू कालका का सफर 4 घंटे में होगा पूरा, ये होगा रूट; यात्रियों को चुकाना होगा इतना किराया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। नमो भारत रैपिड रेल भी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन की तरह बहुत सी खासियतों शामिल हैं। इन ट्रेनों में यात्रियों को मेट्रो ट्रेन जैसी सुविधाएं तो मिलेगा ही, साथ ही इससे यात्रा में लगने वाला समय भी आम ट्रेनों के मुकाबले

कम लगेगा। कम दूरी के शहरों के बीच सफर करने वाले यात्रियों के लिए अच्छी खबर हैं। रेलवे अब ऐसे शहरों के बीच नमो भारत रैपिड रेल दौड़ाने की तैयारियां कर रहा है। अभी इस तरह की नमो भारत रैपिड रेल गुजरात के अहमदाबाद- भुज और बिहार के जयनगर-पटना रूट पर दौड़ रही है। जल्द ही इस शानदार ट्रेन को नई दिल्ली-कालका मार्ग पर चलाने की तैयारी हो रही है।नमो भारत रैपिड रेल भी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन की तरह बहुत सी खासियतों शामिल हैं। इन ट्रेनों में यात्रियों को मेट्रो ट्रेन जैसी सुविधाएं तो मिलेगा ही, साथ ही इससे यात्रा में लगने वाला समय भी आम ट्रेनों के मुकाबले कम लगेगा। ये ट्रेन करीब 300 किलोमीटर की दूरी चार घंटे में पूरी कर लेगी। नमो भारत ट्रेन शुरू होने से दिल्ली से शिमला जाने वाले यात्रियों को भी कम समय लगेगा क्योंकि शिमला से कालका के लिए कनेक्टिंग ट्रेन मिलती हैं।रेलवे ने अभी इस ट्रेन के चलाने की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है। सूत्रों का कहना है कि, जल्द ही यह ट्रेन शुरू हो सकती है. नमो भारत ट्रेन का ठहराव पानीपत जंक्शन, करनाल, कुरुक्षेत्र जंक्शन, अंबाला कैंट जंक्शन, चंडीगढ़ और चंडी मंदिर में होने की संभावना है। नई दिल्ली-कालका नमो भारत ट्रेन नई दिल्ली से सुबह 6:00 बजे रवाना होगी और 10:00 बजे कालका पहुंचेगी। जबकि वापसी में यह ट्रेन कालका से शाम 5:00 बजे निकलेगी और रात 9:00 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। नई दिल्ली-कालका नमो भारत रैपिड रेल में 16 कोच होंगे।

अक्षय तृतीया पर 12 टन सोना और 400 टन चांदी की होगी खरीदी, 16000 करोड़ के व्यापार की संभावना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। ऑल इंडिया ज्वेलर्स एंड गोल्डस्मिथ फेडरेशन के अध्यक्ष पंकज अरोड़ा ने बताया कि इस साल अक्षय तृतीया के दिन लगभग 12 टन सोना जिसकी क़ीमत लगभग 12 हजार करोड़ और 400 टन चांदी जिसकी क़ीमत 4 हजार करोड़ टोटल 16 हजार करोड़ के व्यापार होने की संभावना हैं। बुधवार यानी 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया है। इसे बहुत शुभ माना जाता है। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के मुताबिक, अक्षय तृतीया एक शुभ दिवस होता है, जो सफलता और सौभाग्य लेकर आता है। ऐसे में लोग इस दिन धन और समृद्धि का स्वागत करने के लिए सोना खरीदने को शुभ मानते हैं। यह भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया के दिन खरीदा गया सोना कभी घटता नहीं, बल्कि सदैव बढ़ता है। अक्षय तृतीया पर 12 टन सोना और 400 टन चांदी की खरीद होने की संभावना है। इस मौके पर 16 हजार करोड़ रुपये का व्यापार होने की संभावना है। इस वर्ष अक्षय तृतीया के अवसर पर देशभर में आभूषण बाजार में बिक्री को लेकर मिलाजुला रुझान देखा जा रहा है, क्योंकि सोने की क़ीमतों में हाल ही में जबरदस्त वृद्धि हुई है। कैट के पदाधिकारियों ने कहा कि इस वर्ष सोने और चांदी की कीमतों में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। इस समय 10 ग्राम सोने का भाव1,00,000 तक पहुँच गया है, जबकि पिछले वर्ष अक्षय तृतीया पर यही दर 73,500 थी। इसी प्रकार, चांदी का भाव भी 1,00,000 प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया है, जबकि पिछले वर्ष यह 86,000 प्रति किलोग्राम था।

कोलकाता के होटल में आग ने मचाया तांडव, 14 लोगों की मौत, कई घायल; राहत-बचाव अभियान जारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में कोलकाता के मेचुआपट्टी इलाके में मंगलवार रात करीब साढ़े आठ बजे एक होटल में आग लग गई। आग लगने के कारण भीड़भाड़ वाले इलाके में अफरा-तफरी मच गई। हादसे में 14 लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा, इमारत की खिड़कियों और संकरी दीवारों से भागने की कोशिश करते दिखाई दिए। इस दौरान चौथी मंजिल से कूदने का प्रयास करते समय कई लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि 14 शव बरामद किए गए हैं और टीमों ने कई लोगों को बचाया है। उन्होंने कहा कि आग

संकरी दीवारों से भागने की कोशिश करते समय कई लोग घायल हो गए। पश्चिम बंगाल में कोलकाता के मेचुआपट्टी इलाके में मंगलवार रात एक होटल में आग लग गई। हादसे में 14 लोगों की मौत हो गई। जबकि, कई अन्य लोग घायल हो गए। सूचना पर पहुंची दमकल विभाग की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। कोलकाता पुलिस आयुक्त मनोज कुमार वर्मा, आग रात करीब 8:15 बजे ऋतुराज होटल के परिसर में लगी, जिसके बाद बुर्राबाजार के भीड़भाड़ वाले इलाके में अफरा-तफरी मच गई। कई लोग इमारत की खिड़कियों और संकरी दीवारों से भागने की कोशिश करते दिखाई दिए। इस दौरान चौथी मंजिल से कूदने का प्रयास करते समय कई लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि 14 शव बरामद किए गए हैं और टीमों ने कई लोगों को बचाया है। उन्होंने कहा कि आग पर काबू पा लिया गया है और बचाव अभियान अभी भी जारी है। आगे की जांच चल रही है। जांच के लिए एक विशेष टीम भी बनाई गई है। उन्होंने बताया कि आग लगने के कारणों का अभी पता नहीं चला है। हालांकि, उन्होंने संदेह जताया है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी है। सूचना पर दमकल विभाग की 10 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं, जिन्होंने आग पर काबू पाया। हालांकि, भीड़भाड़ वाला इलाका होने के चलते दमकल विभाग की गाड़ियों को वहां पहुंचने में मुश्किलें हुईं और कर्मचारियों को भी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। बता दें कि बुर्राबाजार पूर्वी भारत का सबसे बड़ा थोक बाजार है। कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम और पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा ने घटनास्थल का दौरा किया। इसके अलावा, राज्य भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने व्यक्ति की मौत पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा, 'कोलकाता के बुर्राबाजार के मेचुआ इलाके में एक होटल में लगी भीषण आग में 14 लोगों की मौत से मैं बहुत दुखी हूं। मैं भविष्य में ऐसी दुखद घटनाओं को रोकने के लिए अग्नि सुरक्षा उपायों की गहन समीक्षा और अधिक सख्त निगरानी की अपील करता हूं। घटना पर पश्चिम बंगाल कांग्रेस अध्यक्ष शुभंकर सरकार ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कोलकाता निगम की आलोचना भी की। सरकार ने कहा कि यह एक दुखद घटना है।

रामजीलाल की अर्जी पर सुनवाई 28 मई को, सुरक्षा को लेकर हाईकोर्ट पहुंचे हैं सपा के राज्यसभा सांसद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। सपा के राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन की अर्जी पर 28 मई को सुनवाई होगी।

बुधवार को रामजीलाल की अर्जी पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने दोनों पक्षों के वकीलों के तर्कों को सुना। साथ ही राज्य सरकार और केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। सपा के राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन की अर्जी पर 28 मई को सुनवाई होगी। बुधवार को रामजीलाल की अर्जी पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने दोनों पक्षों के वकीलों के तर्कों को सुना। साथ ही राज्य सरकार और केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता और न्यायमूर्ति हरवीर सिंह की अदालत कर रही है। सुनवाई के दौरान रामजीलाल सुमन के अधिवक्ता इमरान उल्लाह ने अदालत में तर्क दिया कि राज्यसभा में सांसद रामजीलाल सुमन ने जो बयान दिया था उसको रिकॉर्ड से हटा दिया गया है। बावजूद इसके मीडिया उस बयान को कैसे चला रही है। रामजीलाल के अधिवक्ता ने यह भी कहा कि खुलेआम अलग संगठनों द्वारा रामजीलाल सुमन को धमकियां दी जा रही हैं, लेकिन उस पर कोई कार्रवाई न होना यह साबित करता है कि संगठनों को राज्य सरकार का संरक्षण प्राप्त है। दलील दी गई कि रामजीला सुमन पर लगातार हमले हो रहे हैं। हमें आशंका है कि सांसद की हत्या भी हो सकती है। आगे कहा कि सोशल मीडिया पर वायरल है कि रामजीलाल की जुबान काटने के लिए एक करोड़ रुपये की सुपारी दी गई है।सांसद के घर पर 100 लोगों से ज्यादा लोगों ने पहुंचकर हमला किया और बुलडोजर लेकर पहुंचे थे। इस मामले में एक सौ से अधिक लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इससे पता चलता है कि यूपी में कानून और व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। कहा कि हम राज्य सरकार के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन रामजीलाल की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए। राज्य सरकार के अधिवक्ता ने दलील दी कि रामजीलाल को दोहरी सुरक्षा प्रदान की गई है। बता दें कि करणी सेना से विवाद के बाद सुरक्षा की मांग लेकर सपा के राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन इलाहाबाद हाईकोर्ट पहुंचे हैं। सांसद रामजी लाल सुमन की याचिका पर सुनवाई टल गई थी। गलत कोर्ट में मामला सूचीबद्ध होने के कारण सुनवाई टल गई थी। समाजवादी पाटी के राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन और उनके बेटे पूर्व विधायक रणधीर सुमन ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर सुरक्षा की गुहार लगाई है। साथ ही उन्होंने आवास पर करणी सेना के कथित हमले के आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई और निष्पक्ष जांच करने की मांग की है।

राजू पाल के हत्यारों को बरेली जेल में शिफ्ट करने की मांग, विधायक पूजा पाल ने जताई हत्या की आशंका

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। विधायक पूजा पाल ने विधायक राजू पाल हत्याकांड पाल हत्याकांड के तीन खूंखार अभियुक्त आबिद पुत्र बच्चा मुंशी उर्फ अनवारुल हक, जावेद उर्फ

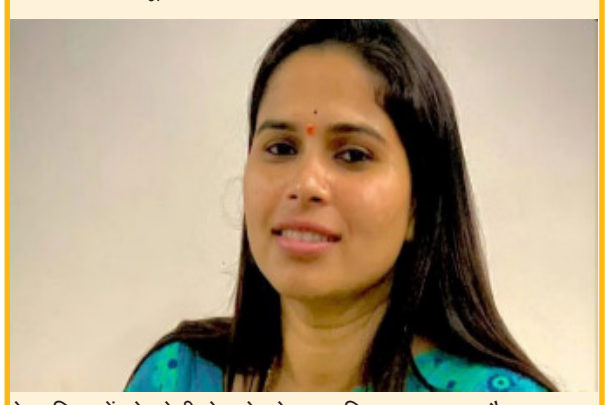

के अभियुक्तों को बरेली जेल भेजने की मांग की है। मुख्यमंत्री को भेजे गए पत्र में चायल विधायक ने कहा कि राजू पाल हत्याकांड के तीन खूंखार अभियुक्त आबिद पुत्र बच्चा मुंशी उर्फ अनवारुल हक, जावेद उर्फ जाबिद पुत्र बचऊ और गुलहसन पुत्र मुख्तार मार्च 2024 में हाईकोर्ट से सजा पाने के बाद नैनी केंद्रीय कागार में बंद हैं। कहा कि यह तीनों माफिया अतीक अहमद गैंग के सदस्य हैं। मंडल की जेल में रहकर यह लोग अतीक गैंग का संचालन कर रहे हैं। गैंग के अन्य सदस्यों से साठगांठ करके अवैध प्लाटिंग और अवैध धंधे कर रहे हैं। कहा कि इन लोगों से हमेशा जान का खतरा बना हुआ है। पूजा पाल ने इन तीनों सजायाफ्ता अभियुक्तों को नैनी जेल से बरेली जेल शिफ्ट करने की मांग की है।

एक चरपाई पर सलवार और कुर्ती दूसरी पर मिली युवती की गला कटी लाश, बंद था कमरा; इस शख्स ने कई बार किया फोन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। यूपी के कौशांबी जिले में एक युवती की गला रेतकर हत्या करने का मामला सामने आया है। युवती का शव अर्द्धनग्न अवस्था में घर में मिला है। दुष्कर्म की आशंका जताई जा रही है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले में युवती की हत्या का मामला सामने आया है। कोतवाली इलाके में रविवार की रात घर की दूसरी मंजिल पर कमरे में सो रही डाककर्मी की बेटी की गला रेतकर हत्या कर दी गई। आशंका जताई जा रही है कि दुष्कर्म के बाद वारदात को अंजाम दिया गया है। सूचना पर एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने एएसपी राजेश कुमार सिंह व कई थानों की फोर्स के साथ मौका मुआयना किया। साथ ही आसपास के लोग भी एकत्रित हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, अर्द्धनग्न अवस्था में चारपाई पर पड़ी युवती के गले और दोनों हाथ की हथेलियों को हंसिया से रेतकर हत्या की गई थी। कमरे में हंसिया भी मिला, जिस पर खून लगा था। सूचना पर पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। शव की हालत देखकर दुष्कर्म के बाद हत्या की आशंका जताई जा रही है, हालांकि कातिल कौन हैं, इस बारे में परिजन कुछ नहीं बता पा रहे हैं। सीओ कौशाम्बी अभिषेक सिंह ने बताया कि पिता की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। मौके से तमाम साक्ष्य एकत्रित कर कई बिंदुओं पर जांच की जा रही है। संदेह के दायरे में आए कुछ लोगों से पूछताछ भी हो

फॉरेंसिक टीम ने भी साक्ष्य जुटाए। मामले में पिता की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया गया। पुलिस के अनुसार, डाककर्मी की ओर से गांव में ही दूसरे मकान का निर्माण कराया जा रहा है। ऐसे में रविवार की रात खाना खाने के बाद वह निर्माणाधीन मकान में पत्नी के साथ सोने चले गए, जबकि 25 वर्षीय बेटी पुराने घर में दूसरी मंजिल पर बने कमरे में सोने के लिए चली गई। पिता ने बताया कि सोमवार सुबह पुराने घर पहुंचकर उन्होंने बेटी को आवाज लगाई, लेकिन जवाब नहीं मिला। इसके बाद पड़ोसी के घर की छत फांदकर जब वह बेटी के कमरे में पहुंचे तो वहां खून से लथपथ उसका शव पड़ा था। चीख-पुकार सुनकर रही है। जल्द घटना का खुलासा होगा। युवती की हत्या करने वाले कातिलों के बारे में परिजन कुछ नहीं बता पा रहे है। घटनास्थल से मिला मृतका का मोबाइल ही उसके कत्ल का राज खोलेगा, ऐसा पुलिस का मानना है। मोबाइल कॉल डिटेल की मदद से ही पुलिस ने मृतका के बहन के देवर को पकड़कर पूछताछ कर रही है। पता चला है कि युवती की बहन के देवर से बातचीत होती थी। हत्या की शिकार हुई युवती की आम शोहरत गांव में काफी अच्छी थी। परिजनों ने बताया कि इस वर्ष उसने बीए तृतीय वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। घर पर रहकर सिलाई का काम भी करती थी। इससे मिले रुपयों से वह अपना ऊपरी खर्च संभालती थी। गांव में किसी के यहां आना-जाना उसका नहीं था। परिजन यह नहीं समझ पा रहे कि आखिर कातिल कौन हो सकता है? वहीं मोबाइल की कॉल डिटेल के बाद पुलिस ने जिस युवक को पूछताछ के लिए पकड़ा है। उसके नंबर से युवती को घटना वाली रात कई बार फोन किए जाने की पुष्टि हुई। हालांकि लोगों का मानना है कि फोन किए जाने से हत्या का पूरी तरह युवक पर शक किया जाना पर्याप्त सबूत नहीं है। युवती की हत्या के बाद जांच में पुलिस ने पाया कि जिस घर में युवती सो रही थी। उससे महज 10 कदम दूरी पर उसका दूसरा निर्माणाधीन मकान है। जिसमें उसके माता-पिता सोने चले गए थे। इसके बावजूद कत्ल के वक्त परिजनों व पड़ोसियों ने उसके चीखने की आवाज नहीं सुनी। जिस चारपाई पर शव पड़ा था, उसका बिस्तर भी सुरक्षित था। युवती की सलवार व कुर्ती कमरे के नजदीक बाहर दूसरी चारपाई पर पड़ी थी। इससे लोग यही कयास लगा रहे कि कातिल युवती का कोई जानने वाला भी हो सकता है। उसने पहले मुंह काला किया और बाद में किसी बात पर हुई कहासुनी की वजह से सोते समय युवती को मौत के घाट उतार दिया। पुलिस जांच में यह बात भी सामने आई कि दूसरी मंजिल पर पहुंचने वाले सीढ़ी के दरवाजे पर युवती की तरफ से कुंडी लगी थी, लेकिन जिस कमरे में वह सो रही थी, वह खुला था। नतीजतन कातिल दीवार फांदकर घर में घुसा होगा और उसके कमरे में गया होगा। कमरे के दरवाजे पर मौजूद कुंडी में खून के निशान थे। जिस चारपाई पर युवती का शव पड़ा था, उसके सिर की तरफ पड़ी हंसिया पर थोड़ा खून जरूर लगा था, लेकिन गहरे जख्म देखने से यह लग रहा है कि चापड़ जैसे धारदार हथियार से कत्ल किया गया है। पश्चिमशरीरा में धारदार हथियार से की गई युवती की हत्या की गुत्थी सुलझाने में पुलिस उलझी हुई है। प्रेम प्रसंग से लेकर जमीन विवाद व युवती की विद्यार्थी जीवन में कोई छींटाकशी जैसे कई पहलुओं पर पुलिस जांच कर रही है।

सेंट जोसेफ कॉलेज में आदित्य जायसवाल ने आईसीएससी दसवीं की परीक्षा में स्कूल में किया टॉप

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। सेंट जोसेफ कॉलेज में आदित्य जायसवाल ने आईसीएससी दसवीं की परीक्षा में स्कूल में किया टॉप। प्रयागराज के प्रीतम नगर का रहने वाला है छात्र। दसवीं की परीक्षा में 98.6 फीसदी अंक प्राप्त किया है। सेंट जोसेफ कॉलेज में आदित्य जायसवाल ने आईसीएससी दसवीं की परीक्षा में स्कूल में किया टॉप। प्रयागराज के प्रीतम नगर का रहने वाला है छात्र। दसवीं की परीक्षा में 98.6 फीसदी अंक प्राप्त किया है। रिजल्ट जारी होने के बाद छात्रों की भीड़ परिणाम देखने के लिए विद्यालय पर जुट गई।

एमए के छात्र का होटल में मिला शव, पुलिस जांच में जुटी; परिजनों ने जताया इस बात का शक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रयागराज में एक छात्र का शव मिलने से हड़कंप मच गया है। छात्र का शव होटल में मिला है। परिजनों ने हत्या का शक जताया है। मेजा के ब्रदर्स होटल में विश्वविद्यालय के छात्र अच्युत त्रिपाठी का संदिग्ध हालत में शव मिला है। परिजनों का आरोप है कि अच्युत की हत्या की गई है। अच्युत इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी एमए से लास्ट ईयर का छात्र था। मेजा थाना पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

प्रदेश आस/पास

भारत

फार्मर रजिस्ट्री हेतु जनपद की ग्राम पंचायतों में 30 अप्रैल को चलेगा विशेष अभियान-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री बी0एन0 सिंह ने अवगत कराया है कि 30

अप्रैल 2025 को जनपद में फार्मर रजिस्ट्री का विशेष अभियान की तिथि नियत की गयी है। उन्होंने जनपद की समस्त ग्राम पंचायतों में ग्राम प्रधान/राशन डीलर के माध्यम से कृषकों को सी0एस0सी0 भेज कर पंजीकरण कराये जाने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किये हैं, उक्त कार्य की निगरानी जिला पंचायत राज अधिकारी व जिला पूर्ति अधिकारी द्वारा की जायेगी, इस दौरान जनपद की समस्त सी0एस0सी0 खुली रहें तथा कृषक बन्धुओं के पंजीकरण में पूर्ण योगदान के लिए ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर सकारात्मक सहयोग प्रदान करेंगें, जिन ग्राम पंचायतों में कैंप की तिथि निर्धारित है, उन ग्रामों के सभी कृषक बन्धु कैंप में जाकर अवश्यक लाभ अवश्य उठायें, किसी प्रकार की समस्या होने पर समाधान के लिए उप कृषि निदेशक/जिला कृषि अधिकारी व सम्बन्धित तहसीलदार से सम्पर्क कर सकते हैं। फार्मर रजिस्ट्री बनवाने हेतु कृषक बन्धु आधार, खतौनी व आधार से लिंक मोबाइल लेकर जायें, फार्मर रजिस्ट्री तैयार होने के बाद कृषक बन्धुओं को विभिन्न प्रकार की सुविधाएं हो सकेंगी, जिसमें किसान सम्मान निधि के किश्तों को सुगमता पूर्वक प्राप्त करना, कृषकों को सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल सकेगा, फार्मर रजिस्ट्री हेतु जनपद में 2 लाख 18 हजार 128 लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसके सापेक्ष अब तक जनपद में 1 लाख 14 हजार फार्मर रजिस्ट्री तैयार की जा चुकी है, जो निर्धारित लक्ष्य का 52.1 प्रतिशत है। जिलाधिकारी ने जनपद के कृषक बन्धुओं से अपील की है कि अपने निर्धारित सी0एस0सी0 केन्द्रों में जाकर अनिवार्य रूप से फार्मर रजिस्ट्री बनवा लें।

थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस ने मु.अ.सं.- 245/2025 धारा 137(2), 87, 64(1) बी.एन.एस. व धारा 3/4 पाक्सो एक्ट से सम्बन्धित एक नफर अभियुक्त को किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन में अपराध पर प्रभावी रोकथाम लगाने व वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय तथा क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण/नेतृत्व में थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस द्वारा थाना रॉबर्ट्सगंज पर पंजीकृत मु.अ.सं. 245/2025 धारा 137(2), 87, 64(1) बी.एन.एस. व धारा 3/4 पाक्सो एक्ट से सम्बन्धित अभियुक्त आकाश पुत्र सन्तोष कुमार निवासी जमुई, थाना चुनार जनपद मिर्जापुर को आज दिनांक 29.04.2025 को लोहरा नहर सुकृत के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही की जा रही है। **गिरफ्तार अभियुक्त का नाम व पता-** आकाश पुत्र सन्तोष कुमार निवासी जमुई, थाना चुनार जनपद मिर्जापुर। **गिरफ्तारी करने वाली टीम का विवरण-** 1.उ0नि0 बृजेश कुमार पण्डेय, चौकी प्रभारी सुकृत, थाना रावट्र्सगंज जनपद सोनभद्र। 2.का0 मन्टू कुमार सिंह, चौकी सुकृत, थाना रावट्र्सगंज जनपद सोनभद्र।

थाना रॉबट्र्सगंज एवं खनन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा जनपद में बिना परमिट के गिट्टी का परिवहन करने वाले 01 वाहन को पकड़ा गया, वाहन चालक गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के आदेश के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक के पर्यवेक्षण में व क्षेत्राधिकारी नगर

के कुशल निर्देशन में जनपद में बिना परमिट के परिवहन करते वाहनों पर अंकुश लगाये जाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना रावट्र्सगंज पुलिस एवं खनन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा बिना परमिट के गिट्टी लोड कर परिवहन कर रहे वाहन संख्या ळइ64०ऊ3098 पकडा गया तथा वाहन चालक ओम प्रकाश पुत्र कन्हैया लाल, निवासी पटवध, थाना- चोपन, जनपद- सोनभद्र, उम्र करीब 31 वर्ष को मौके से गिरफ्तार किया गया । जिसके सम्बन्ध में थाना रावट्र्सगंज जनपद सोनभद्र पर मु0अ0सं0 420/2025 धारा 303(2), 317(2), 61(2)(बी) भारतीय न्याय संहिता व 3(1)/58/72(6) उ0प्र0 उपखनिज परिहार नियमावली, 4/21 खान व खनिज अधिनियम व 3 सार्वजनिक सम्पति क्षति निवारण अधिनियम, बनाम 1. वाहन सं0 UP64CT3098 का चालक ओम प्रकाश पुत्र कन्हैया लाल निवासी ग्राम पटवध थाना चोपन जनपद सोनभद्र 2. वाहन UP64CT3098 का स्वामी नाप पता अज्ञात 3. गिट्टी लोड करने वाले स्टोन क्रशर के स्वामी त्रिपती बालाजी इंजीनियरिंग वर्क्स पा0 विपिन तिवारी 04. भण्डारण अनुज्ञप्तिधारी मे0 जय हिन्द सप्लायर प्रो0 श्रीओमप्रकाश यादव पुत्र देवी प्रसाद निवासी बिल्ली कमला पेट्रोल पम्प के पास ओबरा जनपद सोनभद्र के विरूद्ध पंजीकृत कराया गया। अग्रिम विवेचनात्मक कार्यवाही प्रचलित है। **गिरफ्तार अभियुक्त का विवरणः-** वाहन सं0 UP64CT3098 का चालक ओम प्रकाश पुत्र कन्हैया लाल निवासी ग्राम पटवध थाना चोपन जनपद सोनभद्र। **वांछित अभियुक्तो का विवरणः-** 1. वाहन UP64CT3098 का स्वामी नाप पता अज्ञात । 2. गिट्टी लोड करने वाले स्टोन क्रशर के स्वामी त्रिपती बालाजी इंजीनियरिंग वर्क्स पा0 विपिन तिवारी । 3. भण्डारण अनुज्ञप्तिधारी मे0 जय हिन्द सप्लायर प्रो0 श्रीओमप्रकाश यादव पुत्र देवी प्रसाद निवासी बिल्ली कमला पेट्रोल पम्प के पास ओबरा जनपद सोनभद्र । गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीमः- 1. प्रभारी निरीक्षक सत्येन्द्र कुमार राय थाना रॉबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र । 2. ज्येष्ठ खान अधिकारी शैलेन्द्र सिंह जनपपद सोनभद्र । 3. खान निरीक्षक मनोज कुमार सिंह थाना राबट्र्सगंज जनपद सोनभद्र । 4. उ0नि0 राम अवध यादव थाना रावट्र्सगंज जनपद सोनभद्र । 5. थाना रावट्र्सगंज जनपद सोनभद्र पुलिस एवं खनन विभाग जनपद सोनभद्र की संयुक्त टीम द्वारा ।

लीगल एड क्लीनिक का किया गया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली। उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के एक्शन प्लान के अनुक्रम में व माननीय अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश, रायबरेली श्री राजकुमार सिंह के दिशा-निर्देशन में तहसील महराजगंज के अन्तर्गत स्थित लीगल एड क्लीनिक कुण्डौली रायबरेली का निरीक्षण अपर जिला जज/ सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अनुपम शौर्य के द्वारा किया गया। दौरान निरीक्षण वरिष्ठ पराविधिक स्वयं सेवक बृजपाल से लीगल एड क्लीनिक के कार्यों के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी ली गयी। अपर जिला जज/सचिव द्वारा सुनील कुमार उप निरीक्षक बछरावां को निर्देशित किया गया कि वह लीगल एड क्लीनिक को उनके कार्यो के प्रति सहयोग प्रदान करें। इसके अतिरिक्त दिये गये प्रार्थना पत्रों पर की गयी कार्यवाही की सूचना पराविधिक स्वयं सेवक को प्रेषित करना सुनिश्चित करें। उक्त प्रार्थना पत्रों पर की गयी कार्यवाही के सम्बन्ध में प्रार्थीगण को अवगत कराया जा सके। दौरान निरीक्षण सचिव के द्वारा उपस्थित पराविधिक स्वयं सेवकों को समर्पण की भावना से कार्य करने हेतु उत्साहवर्धन कर उनको आमजन को सरकारी सेवाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने व उनका लाभ दिलाये जाने के निर्देश दिये गये।

मई व जून के महीने में न्यायालय सुबह 07 बजे से 01 बजे तकः जिला जज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली। मा0 न्यायालय के अनुसार, प्रत्येक वर्ष मई और जून के महीने के दौरान न्यायालय सुबह 07ः00 बजे से अपरान्ह 01ः00 बजे तक निर्धारित किया जायेगा। जिला न्यायाधीश राज कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया है कि 01 मई से 30 जून तक अधिकारी एवं कर्मचारी सुबह 06ः30 बजे से अपरान्ह 01ः30 बजे तक न्यायालय/कार्यालय में उपस्थित रहेंगे। उन्होंने बताया है कि न्यायालय का समय सुबह 07ः00 बजे से अपरान्ह 01ः00 बजे तक होगा एवं 10ः30 बजे से 11ः00 बजे तक लंच ब्रेक रहेगा।इसके अतिरिक्त एल्डर्स कमेटी, सेंट्रल बार एसोसिएशन, सिविल कोर्ट, रायबरेली के अनुरोध पर 10 मई 2025 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत का समय 10ः00 बजे से प्रारम्भ होगा।

बाढ़ स्टीयरिंग कमेटी की जिलाधिकारी ने बैठक कर संभावित बाढ़ की स्थिति से निपटने हेतु तैयारियों की, की समीक्षा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री बी0एन0 सिंह की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार में बाढ़ स्टीयरिंग कमेटी की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुईं, बैठक में जिलाधिकारी द्वारा जनपद में संभावित बाढ़ की स्थिति से निपटने हेतु तैयारियों की समीक्षा की गई तथा संबंधित विभागों को समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये। उन्होंने कहा कि बाढ़ की स्थिति में जान-माल की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा समुचित कार्ययोजना तैयार की जा रही है। उन्होंने निर्देशित किया कि नदियों के जलस्तर की सतत निगरानी हेतु पर्याप्त संख्या में नावें, राहत सामग्री, मोटर बोट, जीवन रक्षक उपकरण एवं आवश्यक मानव संसाधन पहले से उपलब्ध रहें। बैठक में प्रमुख बिन्दुओं जैसे-बाढ़ संभावित क्षेत्रों की पहचान कर वहां के निवासियों को समय से पूर्व सचेत किया जाए, राहत शिविरों की स्थापना हेतु स्थलों का चयन कर सभी मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित करने, जलश्रोतों एवं बांधों की नियमित निगरानी हेतु एक नियंत्रण कक्ष 24 घण्टे सक्रिय रखने, स्वास्थ्य विभाग द्वारा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में दवाइयों, एंबुलेंस, चिकित्सक दल की व्यवस्था करने, पशुपालन विभाग द्वारा पशुओं के लिए चारा एवं चिकित्सा सुविधा की समुचित व्यवस्था करने, विद्युत एवं जल निगम द्वारा आपातकालीन स्थितियों हेतु अलग से कार्ययोजना बनाये रखने, दूर संचार व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखने, जनपद के सभी तालाबों और पोखरों

व गढढों आदि को पानी से तत्काल भरने का कार्य पूर्ण करने, सुखा की स्थिति से निपटने विभागों द्वारा अपने-अपनी योजना तत्काल तैयार करने, सुखा की स्थिति में पेयजल की आवश्यकता अनुसार आपूर्ति के कार्य को पूर्ण करने, सुखा की स्थिति उत्पन्न होने पर फसलों की बुवाई पर विशेष ध्यान देने, पानी के अभाव में अपने-अपनी योजना तैयार करने, पशु पक्षियों के पेयजल की उचित व्यवस्था करने, ट्यूबवेल आदि के माध्यम से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराने, सभी विभाग अपनी अपनी सूखा-बाढ़ संबंधी कार्य योजना तैयार कर तत्काल संबंधित कार्यालय को उपलब्ध करने, नहरों की साफ सफाई व नदियों की शील्ट की साफ सफाई करना सुनिश्चित करने, सुख की समस्या उत्पन्न होने पर पानी को रिजर्व रखते हुए आवश्यकता अनुसार आपूर्ति करने, समस्त हैंडपंपों के मरम्मत व रिबोर का कार्य तत्काल पूर्ण करने, संबंधित उप जिला अधिकारी एवं अन्य विभागीय अधिकारी चिन्हित बाढ़ चौकिया व शरणालयों पर संबंधित कार्मिकों की ड्यूटी की तैनाती सुनिश्चित करने, ओबरा डैम में पानी छोड़े जाने हेतु ग्राम स्तर पर जागरूकता किए जाने के लिए ग्राम आपदा प्रबंधन समिति व आपदा मित्रों के साथ बैठक आहूत कर जागरूकता का कार्य करने आदि विषय पर विचार-विमर्श किया गया, बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को विभागवार जिम्मेदारियां सौंपने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारी को दियें हैं। बैठक में जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अधिकारी अपने-अपने कार्य क्षेत्रों का दौरा कर ग्राउंड रियलिटी की समीक्षा करें। बाढ़ के समय त्वरित निर्णय लेने के लिए अधिकारियों को फील्ड में मौजूद रहना अनिवार्य किया जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारी के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। बाढ़ नियंत्रण हेतु अलग-अलग स्तर पर मॉक ड्रिल (पूर्वाभ्यास) कराई जाए। आमजन को समय पर सूचना देने हेतु प्रचार-प्रसार माध्यमों का प्रयोग किया जाए। जिलाधिकारी ने समस्त अधिकारियों को आपसी समन्वय एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य करने का निर्देश दिया तथा नियमित बैठक एवं निरीक्षण कर तैयारियों की समीक्षा करने के निर्देश भी दिये। बैठक में अपर पुलिस अधीक्षक श्री कालू सिंह, उप जिलाधिकारी सदर उत्कर्ष द्विवेदी, उप जिलाधिकारी घोरावल राजेश सिंह, उप जिलाधिकारी ओबरा विवेक कुमार सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह, संबंधित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी उपस्थित रहें।

शुकदेव जन्म सहित कई प्रसंगों का किया भावपूर्ण वर्णन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। नोएडा सेक्टर 82 स्थित प्राचीन तपोभूमि ब्रम्हचारी कुटी में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा एवं श्री विष्णु महायज्ञ के दूसरे दिन कथा व्यास आचार्य अमित दीक्षित ने भीष्म स्तुति, कुंती स्तुति, परीक्षित जन्म, शुकदेव जन्म आदि कथाओं का भावपूर्ण वर्णन किया। वहीं यज्ञाचार्य मनोहर शास्त्री ने विधि विधान से मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ में आहुतियां अर्पित कराईं । शुकदेव जन्म का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि भगवान शिव माता पार्वती को अमर कथा सुना रहे हैं , माता को नींद आ जाती है और उनकी जगह एक तोता हुंकारी भरने लगता है। जब शिव जी को पता चला तो उन्होंने शुक को मारने के लिए त्रशूल छोड़ दिया। तीनों लोकों में भागता शूक व्यास जी के आश्रम पहुंचा और उनकी पत्नी के मुख से गर्भाशय में पहुंच गया जहां वह बारह वर्ष तक रहे और भगवान कृष्ण के आश्वासन के बाद जन्म लिया। कथा रोजाना 5 बजे से 8 बजे तक हो रही है। 30 अप्रैल को सृष्टि वर्णन, सती शिव विवाह, कपिल उपाख्यान आदि प्रसंगों का वर्णन किया जाएगा। आप सभी भगवत चरण अनुरागी भक्तजन कथा में पधारकर कथा रूपी अमृत का पान अवश्य करें। इस अवसर पर महंत ओम भारती जी महाराज , फलाहारी महाराज, विकास भारती जी, अशोक कुमार, गोपेश पांडेय, आकाश, शिववृत तिवारी, सुमित दीक्षित, सहित तमाम भक्तजन मौजूद रहे।

सभा के माध्यम से सीटू नेताओं ने कर्मचारियों से 20 मई की हड़ताल को सफल बनाने की अपील किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। नोएडा मजदूरों को गुलाम बनाने वाले चारों श्रम संहिताओं को

रद्द कराने और श्रमिकों की अन्य मांगों को लेकर 20 मई को होने जा रही राष्ट्रव्यापी औद्योगिक हड़ताल को सफल बनाने के लिए आज झंडापुर सीटू कार्यालय पर बी टी आर वाटको व वाइब्रो कास्टिंग फेस-2, नोएडा कम्पनी के कर्मचारियों की सभा हुई। सभा को सीटू के राष्ट्रीय सचिव के एन उमेश ने संबोधित करते हुए केंद्र व प्रदेश सरकारों की मजदूर विरोधी नीतियों और लेबर कोड़ों से होने वाले नुकसान को रेखांकित करते हुए 20 मई 2025 को एक दिवसीय राष्ट्रव्यापी हड़ताल को पूरी तरह सफल बनाने की अपील किया। सभा को सीटू गाजियाबाद के नेता जीएस तिवारी, गौतम बुद्ध नगर नेता गंगेश्वर दत्त शर्मा सहित कई मजदूर नेताओं ने संबोधित किया।

मा0 सांसद राहुल गांधी की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति (दिशा) की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली। मा0 सांसद सदस्य लोकसभा संसदीय क्षेत्र रायबरेली/ मा0 अध्यक्ष ''दिशा'' समिति राहुल गांधी एवं मा0 संसद सदस्य लोकसभा संसदीय क्षेत्र अमेठी/मा0 सह-अध्यक्ष ''दिशा'' समिति किशोरी लाल एवं मा0 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने बचत भवन सभागार में जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति ''दिशा'' की बैठक की। बैठक में जिले के विकास से जुड़े सभी बिंदुओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। बैठक में जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति (दिशा) से सम्बन्धित समस्त योजनाओं का बिन्दुवार प्रस्तुतीकरण किया। मा0 अध्यक्ष ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना (मनरेगा), प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, स्वच्छ भारत मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, प्रधानमंत्री कृषि सिचाई योजना, मध्यान्ह भोजन योजना, समेकित बाल विकास कार्यक्रम, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन,समग्र शिक्षा अभियान, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय-ग्रामीण कौशल

योजना, डिजिटल इण्डिया-भू अभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम, अवस्थापना सम्बन्धी कार्यक्रम, समन्वित ऊर्जा विकास कार्यक्रम, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, जल प्रबन्धन कार्यक्रम, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना सहित अन्य योजनाओं पर गम्भीरतापूर्वक चर्चा की गई।मा0 सांसद ने जिलाधिकारी को सड़कों की मरम्मत व निर्माण कार्य से संबंधित जन प्रतिनिधियों द्वारा प्राप्त समस्याओं का प्राथमिकता पर निस्तारण कराने के निर्देश दिए। पशुपालन विभाग से वेटरनरी डॉक्टरों की उपलब्धता और कृत्रिम गर्भाधान सुविधाओं की जानकारी ली। एनएचआई द्वारा कराये जा रहे गंगा एक्सप्रेसवे निर्माण कार्य की प्रगति भी जानी। जनपद में बन रहे बाईपास सड़कों पर भी चर्चा हुई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में स्वास्थ्य कर्मियों की उपलब्धता की भी जानकारी ली। साथ ही कहा कि कौशल विकास मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके अभ्यर्थियों का फालोअप कर रोजगार दिलाए। उन्होंने पूर्व में आयोजित दिशा बैठक के अनुपालन आख्या की भी समीक्षा की तथा संतोष व्यक्त किया। बैठक में मा0 जनप्रतिनिधियों द्वारा जन सुविधाओं से जुडे अनेक सुझाव और समस्याओं को भी रखा गया, जिनके समाधान के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये गये। मा0 सांसद ने कहा कि जन समस्याओं को गम्भीरता से लेते हुए अधिकारी प्राथमिकता से समयबद्ध उसका समाधान करायें। विकास योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु एक ठोस कार्य योजना बनाकर कार्य करें। जनप्रतिनिधि व अधिकारी जनपद के विकास के लिये समन्वय बनाकर टीम भावना से कार्य करें, जिससे जनपद विकास में अग्रणी रहे। मा0 सांसद द्वारा बैठक में महिला हेल्पाइन नम्बर 181 पर काल करायी गयी, काल करने पर काल तुरन्त रिसीव हुयी तथा मा0 सांसद द्वारा कार्यरत कार्मिक से वार्ता करने पर उनके द्वारा संतोष व्यक्त किया गया। बैठक के अन्त में मा0 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उ0प्र0 दिनेश प्रताप सिंह द्वारा जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में घटित दुखद घटना के पीड़ितों के प्रति शोक संवेदना व मृतकों के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करने हेतु दो मिनट का मौन रखने का प्रस्ताव रखा, जिस पर सभी ने सहमति व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखा। बैठक में मा0 अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी, मा0 सदस्य विधान परिषद उमेश द्विवेदी, मा0 सदस्य विधान परिषद अवनीश कुमार सिंह, मा0 विधायक सलोन अशोक कुमार, मा0 विधायक सरेनी देवेन्द्र प्रताप सिंह,सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अनियंत्रित होकर कार पहाड़ी से टकराया कार सवार बचे बाल बाल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। डाला सोनभद्र हाथीनाला थाना क्षेत्र में एक कार अनियंत्रित होकर पहाड़ी से टकरा कर पलट गई। जिसमे कार सवार सुरक्षित बच गए।प्राप्त जानकारी के अनुसार मलखान सिंह मौर्या उम्र लगभग 55 वर्ष जो अपने परिवार के साथ अपनी कार द्वारा बलिया से शक्तिनगर जा रहें थे कि थाना हाथीनाला से लगभग एक किलोमीटर पहले कार अचानक अनियंत्रित होकर पहाड़ी से टकराते हुए पलट गई जिसमें उनकी पत्नी पुष्पा मौर्या उम्र लगभग 50वर्ष को सर में थोड़ा चोट आई और उनकी शादीशुदा पुत्री धर्मावती उम्र 28 वर्ष एवं एक सात वर्ष और एक वर्ष की बेटी सभी सुरक्षित बच गए। वही राहगीरों द्वारा इस घटना की सूचना पिआरबी 112 न0 एवं थाना हाथीनाला को दिए सूचना मिलते ही पिआरबी 112 न0 और थानाध्यक्ष भैया एस पी सिंह अपने सहयोगियों के साथ मौके पर पहुंचकर सभी को सुरक्षित कार से बाहर निकलवा कर पास के एक निजी क्लिनिक में इलाज करवाया गया।

डाला पुलिस ने 1 किलो 200 ग्राम गांजा के साथ एक अभियुक्त किया को गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

डाला सोनभद्र। डाला सोनभद्र।पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्री कालू सिंह व क्षेत्राधिकारी नगर डॉ0 चारू द्विवेदी के पर्यवेक्षण में मादक पदार्थों की तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना चोपन पुलिस द्वारा दिनांक 28.04.2025 को समय करीब 19.55 बजे कजरहट चौराहा कस्बा डाला थाना चोपन से अभियुक्त रवि शर्मा पुत्र शिवशंकर निवासी कोटा थाना चोपन जनपद सोनभद्र उम्र करीब 20 वर्ष को एक प्लास्टिक के झोले में 01 किलो 200 ग्राम नाजायज गांजा व गांजा बिक्री का 68650/- रुपया नगद के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी व गिरफ्तारी के आधार पर थाना चोपन पर

मु0अ0सं0- 144/2025 धारा- 8/20 त्रइर्ए्रू का अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्त को रिमाण्ड हेतु माननीय न्यायालय रवाना किया गया। गिरफ्तार एवं बरामदगी करने वाली टीम उ0नि0 आशीष कुमार पटेल चौकी प्रभारी,हे0का0 मनोज कुमार,का0 घनश्याम यादव शामिल रहे।

मिर्जापुर, सोनभद्र

बाल गृह बालिका का जिलाधिकारी ने किया औचक निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। बाल गृह बालिका में दी जाने वाली सुविधाओं का लिये जायजा बाल गृह बालिका में शासन द्वारा निर्धारित सभी सुविधाएं करायी जायें उपलब्ध-जिलाधिकारी जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने आज बाल गृह बालिका राबर्ट्सगंज का औचक निरीक्षण किये, निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने बाल गृह बालिका में आवासित बालिकाओं से सीधा संवाद कर संस्था द्वारा द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का जायजा लिये, इस दौरान जिलाधिकारी ने संस्था अधीक्षिका को निर्देशित करते हुए कहा कि

संस्था में आवासित बालिकाओं का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण सुनिश्चित कराया जाये और निर्धारित मीनू के अनुसार उन्हें नाश्ता, भोजन उपलब्ध कराया जाये, आवासित बालिकाओं की काउंसिलिंग भी समय-समय पर की जाये, जो बालिका घर जाने के इच्छुक हैं, उन्हें बाल कल्याण समिति के माध्यम से नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही करते हुए अभिभावक से संवाद कर उन्हें घर भेजने की कार्यवाही भी की जाये, संरक्षण अधिकारी द्वारा नियमित रूप से बाल गृह बालिका केन्द्र का निरीक्षण किया जाये और उससे सम्बन्धित रिपोर्ट प्रेषित किया जाये, इस दौरान जिलाधिकारी ने बालिका केन्द्र के उपस्थिति पंजिका का भी निरीक्षण किये, निरीक्षण में काउंसलर रीना सिंह, अनुपस्थित थे, जिनका स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारी को दिये गये। इस मौके पर प्रोबेशन अधिकारी श्रीमती इन्द्रावती देवी, जिला दिव्यांगजन एवं सशक्तिकरण अधिकारी सुश्री विद्या देवी, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह, बाल गृह बालिक के अधीक्षिका श्रीमती नीलम सिंह, बाल कल्याण अधिकारी रिन्कू यादव, अर्थ चिकित्सक श्रीमती कविता चतुर्वेदी भी मौके पर उपस्थित रहें।

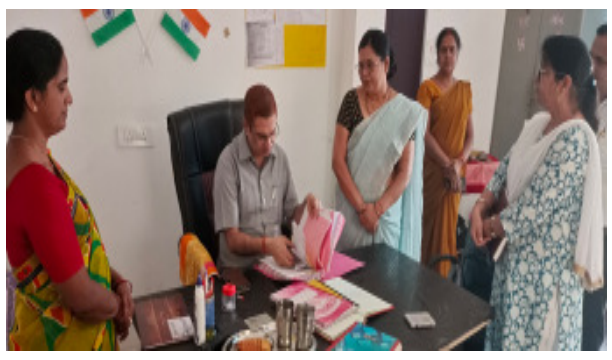

कैंप लगाकर 80 प्रतिशत लोकल बेरोजगारों की हो भर्ती: रोशन लाल यादव

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र।सोनांचल संघर्ष वाहिनी(सोसंवा) कार्यकर्ताओं ने बुधवार को कलेक्ट्रेट पहुंच कर एनसीएल खड़िया कोयला के विस्थापित, प्रभावित और लोकल बेरोजगारों की भर्ती के नाम पर धड़ल्ले से युवाओं का दोहन किया जा रहा है। भर्ती घोटाले की जांच हो और संगठित गिरोह द्वारा अभी सुनिश्चित हो। बावजूद इसके आदेश की अनदेखी कर चंद संगठित लोगों व एनसीएल खड़िया प्रबंधन की मिलीभगत से बाहरी लोगों की भर्ती सुविधा शुल्क लेकर बेरोकटोक

परियोजना में काम कर रही निजी कंपनी कलिंगा के विरुद्ध तीन सूत्रीय मांगों का ज्ञापन एडीएम न्यायिक रमेश चंद्र यादव को सौंपा। सोनांचल संघर्ष वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट रोशन लाल यादव ने कहा कि भर्ती के नाम पर धड़ल्ले से वेरोजगार युवाओं का दोहन किया जा रहा है। जिसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसके लिए चाहे जितना बड़ा आंदोलन क्यों न करना पड़े किया जाएगा। उन्होंने कहा कि निजी कंपनी में एक हजार के ऊपर संविदा हेलफर और ड्राइवरों की भर्ती में संगठित संरक्षण प्राप्त तथा कथित गिरोह के द्वारा यहां तक कराई गई भ ती को निरस्त कर भर्ती की स्पष्ट गाइड लाइन बनाकर तीन दिन खुला कैंप लगाकर एक हजार में 80ज्ञ् विस्थापित, प्रभावित और लोकल बेरोजगारों की भर्ती सुनिश्चित की जाए, अन्यथा अब यह आंदोलन जल्द उर्जांचल जन आंदोलन के रूप में बदल जाएगा। श्री यादव ने एनआईटी के समझौते के आधार पर एनसीएल मुख्यालय सिंगरौली के चीफ जनरल मैनेजर द्वारा 10 जुलाई 2006 को स्पष्ट आदेश पारित किया गया है कि संविदा की समस्त भर्ती की 80 प्रतिशत विस्थापित, प्रभावित व लोकल बेरोजगारों की ही भर्ती की जा रही है। कहा कि अगर की भर्ती को निरस्त कर मामले की जांच कराई जाए तो सच्चाई सामने आ जाएगी और उर्जांचल में बेरोजगारों की भर्ती का खेल खेल रहे संगठित लोग जल्द बेनकाब होंगे। ज्ञापन सौंपने वालों में प्रमुख रूप से सोसंवा के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष कृष्ण मोहन यादव, राष्ट्रीय महासचिव पुष्पेंद्र चौधरी, रामचंद्र सिंह,सत्यप्रकाश यादव,अरुण कुमार सोनू,रामकेश पाल,फिरोज खान,सलमान खान, अन्नू खान, बब्बू खान, वीरेंद्र कुमार, दीपक कुमार गिरी, संतोष सोनी आदि शामिल रहे।

बीजेपी सरकार में देश का चौमुखी विकास हो रहा है:डॉ0 महेन्द्र नाथ पाण्डेय

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र।भारतीय जनता पार्टी सोनभद्र द्वारा प्रबुद्धवर्ग सम्मेलन का कार्यक्रम होटल सवेरा के मीटिंग हॉल में सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व केन्द्रिय मंत्री डॉ0 महेन्द्र नाथ पाण्डेय उपस्थित रहे

कार्यक्रम का शुभआरम्भ मुख्य अतिथि द्वारा पं0 दीनदयाल उपाध्याय व श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिले के प्रतिष्ठित चिकित्सक डॉ0 ए0के0 सिंह व संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ0 प्रसन्न पटेल ने किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि देश में जबसे भारतीय जनता पार्टी व मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी है देश का चौमुखी विकास हो रहा है देश के विकास से लेकर अपराध पर नियन्त्रण हर मोर्चे पर मोदी सरकार नीत नया इतिहास रच रही है जिसमें वक्फ संशोधन विधयक 2025 जो कमजोर वर्ग एवं मुस्लिम महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से मजबूत करने में सहायक शाबित होगा वक्फ इस्लामी कानूनी के अन्तर्गत स्थापित एक अपर्वतनीय धर्मार्थ निधी है जिसे भारत में वक्फ अधिनियम 1995 के तहत मान्यता प्राप्त और विनियममित किया जा जाता है इस कानून के अन्तर्गत वक्फ बोर्ड शक्तियों का तत्कालिन सरकार ने विस्तार करके मनमाने ढंग से भूमि अधिग्रहण को सक्षम करके सम्पत्ति के अधिकारों को कमजोर कर दिया था लेकिन 2025 के इस नये कानून से कमजोर वर्ग की मुस्लिम महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक रूप से मजबूत करने का कार्य किया जा रहा है देश का किसान नौजवान, व्यापारी, मजदूर सहित सभी वर्गों के हितों के लिए निरन्तर योजनायें क्रियान्वित हो रही है। सड़क निर्माण से लेकर हर घर तक पेयजल पहुँचाने का कार्य भी तेजी से हो रहा है शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारत ने नया किर्तीमान स्थापित किया है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश प्रदेश की सरकार सभी वर्गों के विकास के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। आगे कहाँ कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार के आठ वर्षों में योगी सरकार ने अनेकों जनहित की योजनाएं लागू की तथा अपराधियों पर पूर्ण अंकुश लगाकर प्रदेश को भय व अपराधमुक्त बनाने का कार्य किया। प्रदेश के प्रत्येक जनपद में मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई. महिला शसक्तिकरण के लिए भी प्रदेश सरकार द्वारा अनेको योजनाएं चलाई जा रही है। जिसका सीधा लाभ प्रदेश की महिलाओं को हो रहा है। कार्यक्रम को सम्बोन्धित करते हुए सदस्य विधान परिषद विनीत सिंह ने कहाँ कि देश में एक राष्ट्र एक चुनाव की पहल मोदी सरकार द्वारा की गई है राष्ट्रहित में यह एक महत्वपूर्ण निर्णय होगा तथा देश की चुनावी व्यवस्था और भी व्यवस्थित और सुदृढ़ होगी किन्तु विपक्षियों द्वारा लगातार मोदी सरकार की नीतियों का विरोध कर देश को भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा है। वक्फ बोर्ड को निर्णय पर भी देश में अराजकता फैलाने का प्रयास भी विपक्ष द्वारा किया जा रहा है। किन्तु देश की जनता मोदी सरकार के साथ है और केन्द्र सरकार के निर्णयों की सराहना कर रही है। जम्मू कश्मीर में हुए आंतकी हमले का भी मोदी सरकार कहा जवाब देने के लिए तैयार है और आतंकवाद के खिलाफ पूरा देश एक जूट होकर मोदी जी के साथ खड़ा है। जिलाध्यक्ष नन्दलाल गुप्ता ने कार्यक्रम में आये हुए सभी लोगों का स्वागत अभिनन्दन किया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सदर विधायक भूपेश चौबे . पूर्व क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमेश मिश्रा, निवर्तमान जिलाध्यक्ष अजीत चौबे, उदय नाथ मौर्य, ओम प्रकाश दूबे, संतोष शुक्ला, कमलेश चौबे, सुनील सिंह, पुष्पा सिंह, गुड़िया त्रिपाठी, रजनीश रघुवंशी, वृजेश श्रीवास्तव, अधिवक्ता, व्यवसायीगण मौजूद रहे।

पूजा पाठ व आरती के साथ मनाई गई भगवान परशुराम की जयंती संजय

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। केंद्रीय ब्राह्मण समाज जिला अध्यक्ष आदरणीय संजय बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक भगवान श्री परशुराम की जयंती दिव्य व भव्य पुजा पाठ व आरती के साथ मोहर देव पांडेय, पतंजलि योग समिति जिला प्रभारी रवि प्रकाश त्रिपाठी, भारत स्वाभिमान जिला महामंत्री

कुमार मिश्रा के नेतृत्व में निज आवास बभनौली चण्डी होटल रावटसगंज सोनभद्र पर ,सोनभद्र बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष विनोद कुमार चौबे के मार्गदर्शन व सोनभद्र बार एसोसिएशन के अध्यक्ष आदरणीय अरुण कुमार मिश्रा अध्यक्षता व वरिष्ठ अधिवक्ता डी0जी0सी0 आदरणीय शशांक शेखर कात्यायन के संचालन में मनाई गई, सभी वक्ताओं द्वारा परशुराम जी के जिवनी पर प्रकाश डाला गया, तथा समाज में हो रहे ब्राह्मणों पर अत्याचार को रोकने के लिए ब्राह्मण समाज को एकजुट होकर लड़ाई लड़ने पर बल दिया गया, इस अवसर पर प्रमुख रूप से सोनभद्र बार एसोसिएशन के महामंत्री आदरणीय अखिलेश कुमार पांडेय, ब्राह्मण समाज के जिला संगठन मंत्री सुनील कुमार चौबे, सत्यनारायण दुबे, अमित कुमार मिश्रा, रवि पांडेय ,चंद्रकांत मिश्रा,विवेक पांडेय , शेषमणि तिवारी,ब्रह्मानंद तिवारी,नागेंद्र नाथ चौबे,उमेश कांत तिवारी, प्रेम प्रकाश शुक्ला ,संदीप कुमार मिश्रा, आकाश दुबे ,अजय दुबे, पप्पू दुबे,जगमोहन त्रिपाठी बस्नतु गुरु समेत तमाम ब्राह्मण समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

बाल विवाह मुक्त समाज के निर्माण में हम सबकी जिम्मेदारी- महेशानंद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र।अक्षय तृतीया के शुभ के बारे में भी विस्तृत रूप से जानकारी दी गई ग्राम स्वराज

अवसर पर बाल विवाह कुप्रथा को समाप्त करने हेतु विभिन्न स्थानों पर धर्म गुरुओं द्वारा लिया गया शपथ- बुधवार को देश में नागरिक समाज संगठनों के सबसे बड़े नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) के सोनभद्र में सहयोगी संगठन ग्राम स्वराज समिति की ओर से अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर बाल विवाह कुप्रथा को समाप्त करने हेतु जनपद के विभिन्न स्थानों पर धर्म गुरुओं को दिलाई गयी शपथ साथ ही उनको बाल विवाह से होने वाले हानियो एवं बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 समिति के निदेशक महेशानंद भाई द्वारा बताया गया कि धर्मगुरुओं और पुरोहित वर्ग के बीच जागरूकता अभियान के फलस्वरूप एवं प्रशासन के सहयोग से जनपद में इस वित्तिय वर्ष (अप्रैल 2025 से अब तक) में कुल चौदह बाल विवाह रोकवाया गया जिसमें विशेष रूप से घोरावल, चतरा, दुध्दी और चोपन में बाल विवाह की संख्या अधिक पाया गया साथ ही यह भी बताया गया बाल विवाह रोकथाम हेतु संचालित अभियान जनपद में क्रियान्वित रहेगा।

अशासकीय व वित्तविहीन शिक्षक शिक्षकों ने एकदिवसीय बिगनर कोर्स

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जिला पुस्तकालय में विभिन्न विद्यालय राजकीय ,अशासकीय, तथा वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षक शिक्षकों ने एकदिवसीय बिगनर कोर्स सहायक प्रदेशिक संगठन आयुक्त विंध्याचल मंडल मिर्जापुर राजेश कुमार प्रजापति, अ्ध्ण् सुनील कुमार सिंह, अ्अ्ण् , स्काउटर ट्रेनर सत्यनारायण कनौजिया, अमर सिंह, आईटी कोऑर्डिनेटर शुभम कुमार सोनी द्वारा प्रशिक्षण का कार्य संपन्न कराया गया। यह एकदिवसीय बिगनर कोर्स का प्रशिक्षण जयराम सिंह जिला विद्यालय निरीक्षक के देखरेख में सकुशल संपन्न हुआ। प्रशिक्षण के अंत में डॉ प्रबोध कुमार सिंह जिला मुख्यायुक्त भारत स्काउट गाइड , संतोष कुमार मौर्य जिला सहायक सचिव भारत स्काउट गाइड उत्तर प्रदेश सोनभद्र द्वारा स्काउट और गाइड के महत्व को बताया गया। जिला विद्यालय निरीक्षक व ्म् अरविंद सिंह चौहान द्वारा सभी विद्यालयों को आदेशित किया गया कि स्काउट और गाइड के कार्यक्रम को अपने विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ कराते रहे जिससे बच्चों में एक देश प्रेम और सेवा भाव उत्पन्न हो।

बाइक के धक्के से वृद्ध हुआ गंभीर रूप से घायल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। डाला सोनभद्र चोपन थाना क्षेत्र के गुरमुरा में एक बाइक के धक्के से एक वृद्ध गंभीर रूप से घायल हो गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार को लगभग तीन बजे अटल आवासीय विद्यालय के तरफ से एक बाइक तेज गति से आरही थी और जैसे ही गुरमुरा चौराहे के तरफ मुड़ी कि मोबाइल दुकान पर जा रहें सुरेश कुमार वर्मा उम्र लगभग 55वर्ष पुत्र स्व0 हीरालाल वर्मा निवासी गुरमुरा को जोरदार धक्का मार दिया जिससे वृद्ध गंभीर रूप से घायल हो गया और बाइक सवार को भी रोड पर गिरने से चोट आई हैं। वही स्थानीय लोगों ने टोलप्लाजा के एम्बुलेंस द्वारा घायल वृद्ध को चोपन सीएचसी भेजवा दिया गया। मोके पर पिआरबी हाथीनाला मौजूद रहें।

अग्नि दुर्घटनाओं से बचाव को बच्चों को दिया गया प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। गर्मी के मौसम में आग की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए बुधवार को ठप्रकाश जीनियस पब्लिक इंग्लिश स्कूलठ में अग्निशमन विभाग के अधिकारी 'करण सिंह यादव' ने अपनी में आग लग जाए तो उसे कैसे बुझाया जा सकता है और 'डिटेक्ट फायर' उपकरणों का किस प्रकार उपयोग किया जाता है, इसके साथ ही उन्होंने 'हीट वेव' से बचने के उपाय भी साझा किया, जैसे- अधिक पानी पीना,

टीम के साथ अग्नि दुर्घटनाओं से बचाव किस प्रकार किया जाए, इसकी जानकारी विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं को दी तथा इसके लिए जागरूक किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को आग लगने की स्थिति में सुरक्षा उपायों की जानकारी देना और आपदा से बचाव का तरीका सीखना था। फायर ब्रिगेड के अधिकारियों ने बच्चों को बताया कि गैस सिलेंडर में आग लगने की स्थिति में क्या करना चाहिए, यदि किसी व्यक्ति के कपड़े दोपहर में धूप से बचना और हल्के कपड़े पहनना। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया और कई सवाल पूछे। फायर ब्रिगेड टीम ने बच्चों को डेमो के जरिए वास्तविक स्थिति से रूबरू कराया, जिससे उन्हें व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के दौरान राजेंद्र प्रसाद जैन, संतोष कुमार पांडे, अंबर उपाध्याय, दीपक श्रीवास्तव, अपर्णा श्रीवास्तव, संजू पांडे, रुचि दुबे, मनोज दुबे आदि शिक्षक-शिक्षिका उपस्थित रहें।

साइबर क्राइम पुलिस थाना सोनभद्र द्वारा जय ज्योति इण्टर मीटिएट कॉलेज चुर्क में आयोजित की गयी, साइबर जागरूकता कार्यशाला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र।पुलिस महानिरीक्षक कानून/ व्यवस्था, उ0प्र0 के पत्र के अनुपालन में तथा पुलिस अधीक्षक

सोनभद्र,श्री अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में साइबर अपराध के प्रति चलाये जा रहे विशेष जागरूकता अभियान के तहत आज दिनांक 29.04.2025 को प्रभारी साइबर क्राइम पुलिस थाना निरीक्षक सदानन्द राय मय टीम उ0नि0 मनोज कुमार सिंह, क0आप0 विकास मौर्या, का0 अखिलेश कुमार, का0 जीतेन्द्र कुमार, का0 शैलेश विक्रम, म0का0 लक्ष्मी सिंह साइबर क्राइम पुलिस थाना सोनभद्र द्वारा जय ज्योति इण्टर मीडिएट कालेज चुर्क स्थित समस्त स्टाफ, छात्राएं एवं अन्य सदस्यगण के मध्य साइबर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया । उक्त कार्यक्रम में कालेज के अध्यापक एवं अन्य स्टाफ के साथ-साथ कालेज के छात्राओं ने भी प्रतिभाग किया। प्रभारी साइबर क्राइम पुलिस थाना द्वारा साइबर अपराध व इनसे बचाव के तरीको पर विस्तृत चर्चा किया गया। क0आप0 विकास मौर्या द्वारा मोबाइल चोरी की शिकायत दर्ज करने, साइबर अपराध की वित्तीय शिकायत एवं सोशल शिकायत दर्ज करने एवं साइबर अपराध के शिकार न होने के तरीकों पर विस्तृत जानकारी प्रदान किया गया। वही का0 जीतेन्द्र कुमार तथा का0 शैलेश विक्रम द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, व्हास्टअप, इंस्टाग्राम आदि पर होने वाले साइबर अपराध के बारे में जानकारी प्रदान की गयी। म0का0 लक्ष्मी सिंह तथा का0 अखिलेश कुमार द्वारा अज्ञात विडियो कॉल के द्वारा साइबर अपराध, डिजिटल अरेस्ट, सेक्सट्रार्शन जैसे अन्य गंभीर साइबर अपराधों के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी। साथ ही साथ साइबर अपराध सम्बन्धी शिकायतों के लिये हेल्पलाइन नं0-1930 अथवा ".म्बैमस्ृदन्.ग्ह पर शिकायत दर्ज करने के बारे में बताया गया।

आरटीई के तहत प्रायवेट स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन 07 मई से 21 मई 2025 तक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
शहडोल। शहडोल 30 अप्रैल 2025- राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत गैर अनुदान मान्यता प्राप्त अशासकीय स्कूलों में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह के बच्चों के ऑनलाइन निःशुल्क प्रवेश के लिए समय सारणी जारी की गई है। जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केंद्र शहडोल ने जानकारी दी है कि 07 मई से 21 मई 2025 तक पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन और त्रुटि सुधार के लिए विकल्प उपलब्ध रहेगा। ऑनलाइन आवेदन करने के पश्चात आवेदक 07 मई से 23 मई 2025 तक पावती डाउनलोड और मूल दस्तावेजों का सत्यापन केंद्रों, जनशिक्षा केन्द्र में सत्यापन करा सकेंगे। 29 मई 2025 को पारदर्शी रेंडम पद्धति से ऑनलाइन लॉटरी आयोजित करते हुए आवेदकों को स्कूल का आवंटन किया जायेगा साथ ही चयनित आवेदकों को एस. एम. एस. से भी सूचित किया जाएगा। लॉटरी में चयनित आवेदक 02 जून से 10 जून 2025 के बीच आवंटन पत्र डाउनलोड करके आवंटित स्कूल में प्रवेश पास कर सकेंगे। प्रवेश लेते समय ही संबंधित प्राइवेट स्कूल द्वारा मोबाइल ऐप के माध्यम से एडमिशन रिपोर्ट भी दर्ज की जाएगी। आपने बताया कि ऑनलाइन प्रक्रिया से फार्म के साथ पात्रता संबंधित कोई भी एक दस्तावेज अपलोड करना होगा। ऑनलाइन आवेदन के बाद आवेदक को दस्तावेजों का सत्यापन संबंधित संकुल केन्द्र वाले स्कूल में अधिकृत सत्यापनकर्ता अधिकारी से 23 मई 2025 तक करवाना होगा। आवेदक ने जिस केटेगरी/निवास क्षेत्र के माध्यम से को उसके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एसएमएस के माध्यम से प्रदान की जायेगी। ऑनलाइन लॉटरी की सूची आर.टी.ई. पोर्टल पर भी उपलब्ध रहेगी। साथ ही स्कूल आवंटन की जानकारी बीआरसीसी अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 12 (1) (ग) के अन्तर्गत ऐसे बच्चे पात्र होगे जिनके अभिभावक अनुसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति, वनभूमि के पट्टाधारी परिवार, विमुक्त जाति, निःशक्त

प्रवेश चाहा है, उस केटेगरी एवं निवास प्रमाण का सत्यापन मूल प्रमाण-पत्र से किया जायेगा। लॉटरी के पूर्व ही दस्तावेज सत्यापन हो जाने से आवेदकों को स्कूल आवंटित होने के बाद दस्तावेजों की त्रुटि या अभाव में, एडमिशन निरस्त होने की समस्या उत्पन्न नही होगी। ऑनलाइन आवेदन करने में कोई समस्या या कठिनाई होने की स्थिति में संबंधित विकासखंड के बीआरसी कार्यालय में भी संपर्क किया जा सकता है। लॉटरी प्रक्रिया के बाद आवंटित सीट की जानकारी आवेदक कार्यालय के सूचना पटल पर भी उपलब्ध रहेगी। किसी आवेदक को आवेदन प्रारुप प्राप्त करने अथवा जमा करने में कोई दिक्कत हो या उन स्कूलों की जानकारी चाहिए हो, जहाँ सीटें खाली हैं, तो आर.टी.ई. पोर्टल, जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान के जिला परियोजना कार्यालय अथवा विकासखण्ड स्रोत केन्द्र कार्यालय में संपर्क किया जा सकता है। उन्होनें बताया कि प्रवेश के लिए पात्रता निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का बच्चे (मेडिकल बोर्ड से जारी प्रमाण पत्र अनुसार),एच आई व्ही ग्रस्त बच्चे, गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले परिवार के बच्चे, अनाथ बच्चे (राज्य शासन द्वारा अनाथ बच्चों को भी कमजोर वर्ग में शामिल किया गया है), कोविड-19 से माता-पिता/अभिभावक की मृत्यु के कारण अनाथ बच्चों की शिक्षा आर्थिक सहायता तथा खादय सुरक्षा के लिये मुख्यमंत्री कोविड- 19 बाल कल्याण योजना के हितग्राही के बच्चे शामिल किए जाएगें।

स्पोर्ट्स

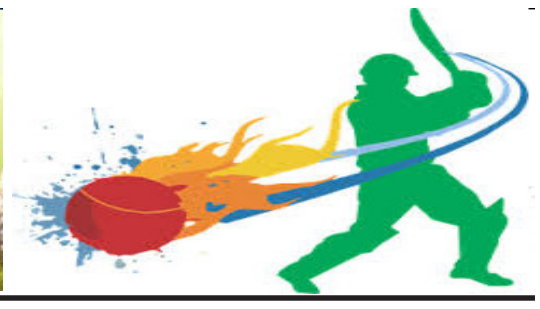

जीत के साथ कोलकाता की आस बरकरा दिल्ली ने घर में गंवाया तीसरा मुकाबला जानिए अंक तालिका का हाल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दिल्ली ने इस सत्र में कुल चार मुकाबले अपने घर में खेले हैं। इनमें उन्होंने तीन मैच गंवाए जबकि एक में उन्हें सुपरओवर में जीत मिली है। वहीं, घर से बाहर जीते जबकि एक में उन्हें शिकस्त मिली है। मंगलवार को इस जीत के साथ कोलकाता ने अपनी प्लेऑफ की आस बरकरार रखी है। उनके खाते में नौ अंक हो गए और उनका नेट रन रेट 0.271 हो गया है।

अक्षर पटेल की टीम ने छह में से पांच मुकाबले जीते जबकि एक में उन्हें मात मिली है सुनील नरेन और वरुण चक्रवर्ती की घातक गेंदबाजी के दम पर कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने दिल्ली कैपिटल्स को 14 रन से हरा दिया। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी गत विजेता केकेआर ने अंगकृष रघुवंशी की 44 रनों की शानदार पारी की बदौलत 20 ओवर में नौ विकेट खोकर 204 रन बनाए। जवाब में दिल्ली निर्धारित ओवर में नौ विकेट खोकर 190 रन बना पाई और लगातार दूसरा मुकाबला हार गई। केकेआर के लिए नरेन ने तीन और वरुण ने दो विकेट लिए जबकि अनुकूल रॉय, वैभव अरोड़ा और आंद्रे रसेल को एक-एक सफलता मिली।दिल्ली ने इस सत्र में अबतक कुल चार मुकाबले अपने घर में खेले हैं। इनमें उन्होंने तीन मैच गंवाए जबकि एक में उन्हें सुपरओवर में जीत मिली है। वहीं, घर से बाहर अक्षर पटेल की टीम ने छह में से पांच मुकाबले

वहीं, दिल्ली 12 अंक और 0.362 का नेट रन रेट लेकर चौथे स्थान पर है। लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली की शुरुआत झटके के साथ हुई थी। अनुकूल रॉय ने पहले ही ओवर में अभिषेक पोरेल को रसेल के हाथों कैच आउट कराया। वह सिर्फ चार रन बना सके। इसके बाद तीसरे और चौथे नंबर पर आए करुण नायर 15 और केएल राहुल सात रन बना पाए। चौथे विकेट के लिए फाफ डुप्लेसिस को कप्तान अक्षर पटेल का साथ मिला। दोनों के बीच 42 गेंदों में 76 रनों की साझेदारी हुई। नरेन ने अक्षर को अपना शिकार बनाया। वह चार चौके और तीन छक्के की मदद से 43 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, फाफ डुप्लेसिस ने 31 गेंदों में इस सत्र का अपना दूसरा पचासा पूरा किया। वह 45 गेंदों में 62 रन बनाकर पवेलियन लौटे। दिल्ली के लिए विप्रज निगम ने 38 रन बनाए। हालांकि, वह अपनी टीम को जीत नहीं दिला सके। उनके अलावा ट्रिस्टन स्टब्स ने एक रन, आशुतोष शर्मा ने सात रन और मिचेल स्टार्क खाता खोले बगैर आउट हो गए। वहीं, दुष्मंथा चमीरा और कुलदीप यादव क्रमशः दो और एक रन बनाकर नाबाद रहे।इस मैच में रहमनुल्लाह गुरबाज और सुनील नरेन ने दिल्ली को अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 48 रन की साझेदारी हुई। स्टार्क ने गुरबाज को अपना शिकार बनाया। वह 12 गेंदों में पांच चौके और एक छक्के की मदद से 26 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद विप्रज निगम ने सुनील नरेन को एलबीडब्ल्यू आउट किया। वह 27 रन बनाकर पवेलियन लौटे। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए अजिंक्य रहाणे ने कुछ अच्छे शॉट खेले और 26 रन बनाने में कामयाब हुए। अंगकृष रघुवंशी ने रिंकू सिंह के साथ दिल्ली पर दबाव डालने की कोशिश की और 50 से ज्यादा रनों की साझेदारी निभाई। चमीरा ने रघुवंशी को पवेलियन की राह दिखाई। वह 32 गेंदों में 44 रन बनाकर आउट हुए जबकि रिंकू ने तीन चौके और एक छक्के की मदद से 36 रनों की अच्छी पारी खेली। वहीं, वेंकटेश अय्यर का बल्ला आज खामोश रहा। वह सिर्फ सात रन बना सके जबकि रसेल अपने जन्मदिन की रोज 17 रन बनाकर रनआउट हो गए। रोवमैन पॉवेल ने पांच रन बनाए और अनुकूल रॉय खाता भी नहीं खोल पाए। हर्षित राणा खाता खोले बिना नाबाद रहे और वरुण चक्रवर्ती ने एकङ रन बनाया। दिल्ली के लिए मिचेल स्टार्क ने तीन विकेट लिए जबकि विप्रज निगम और अक्षर पटेल को दो-दो विकेट मिले। वहीं, दुष्मंथा चमीरा ने एक सफलता अपने नाम की।

बिहार क्रिकेट और द्रविड़ को धन्यवाद कहने के लिए शब्द नहीं हैं', शतक पर वैभव के पिता की प्रतिक्रिया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। लखनऊ सुपर जाएंट्स के मालिक संजीव गोयनका ने एक तस्वीर साझा की है। यह तस्वीर 2017 की है। आठ साल पहले एक आईपीएल मैच देखने वाला यह युवा खिलाड़ी अब खुद ही इस लीग में धमाल मचा रहा है। यह कोई सपना सच होने जैसा है।आईपीएल में सबसे कम उम्र के शतकवीर वैभव सूर्यवंशी के पिता

संजीव सूर्यवंशी ने बेटे की कामयाबी के लिए बिहार क्रिकेट और राजस्थान रॉयल्स के कोच राहुल द्रविड़ को धन्यवाद कहा है। संजीव ने कहा कि उनके पास बिहार क्रिकेट और द्रविड़ को शुक्रिया कहने के लिए शब्द नहीं हैं। वैभव ने सोमवार को 38 गेंदों में 101 रन की पारी खेलकर आईपीएल के सबसे युवा शतकवीर बनने का रिकॉर्ड बनाया। उनकी उम्र 14 साल और 32 दिन है। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी करते हुए 11 छक्के और सात चौके लगाए और राजस्थान रॉयल्स को जयपुर में आठ विकेट से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई।सोशल मीडिया पर लखनऊ सुपर जाएंट्स के मालिक संजीव गोयनका ने एक तस्वीर साझा की है। यह तस्वीर 2017 की है। संजीव गोयनका ने लिखा, 'मैंने पिछली रात को इन की हैरान करने वाली पारी देखी। आज की सुबह मुझे वैभव सूर्यवंशी की आठ साल पुरानी तस्वीर मिली। तब वह छह साल के थे और तब की मेरी टीम राइजिंग पुणे सुपरजाएंट्स का समर्थन करने पहुंचे थे। शुक्रिया वैभव। आपको शुभकामनाएं।' संजीव गोयनका ने लखनऊ और राजस्थान के बीच मैच के बाद वैभव के साथ अपनी तस्वीर भी साझा की। आठ साल पहले एक आईपीएल मैच देखने वाला यह युवा खिलाड़ी अब खुद ही इस लीग में धमाल मचा रहा है।अपने बेटे के क्रिकेट के सपने को पूरा करने के लिए संजीव सूर्यवंशी ने अपनी खेती की जमीन बेच दी थी, लेकिन वैभव के धमाकेदार प्रदर्शन के बाद वह कृतज्ञता की एक मिसाल बन गए। वैभव बिहार के समस्तीपुर शहर के रहने वाले हैं। बिहार क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा जारी एक वीडियो में संजीव ने कहा, 'वैभव ने हमारे गांव को, बिहार को और पूरे भारत को गौरवान्वित किया है। हम इससे ज्यादा खुश नहीं हो सकते और जश्न मना रहे हैं। मैं राजस्थान रॉयल्स को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने पिछले तीन-चार महीनों में उन पर काफी काम किया है।' वैभव ने मैच के तुरंद बाद पिता से बातचीत भी की थी। राजस्थान रॉयल्स ने इसका वीडियो भी शेयर किया है।संजीव ने कहा, 'मैं वैभव के खेल को बेहतर बनाने के लिए मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और बाकी सहयोगी स्टाफ को धन्यवाद देना चाहता हूं। वैभव ने खुद अपने खेल पर बहुत मेहनत की है और यह शतक उसी का नतीजा है।' संजीव ने बिहार क्रिकेट संघ का भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, 'मैं बिहार क्रिकेट प्रमुख राकेश तिवारी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने वैभव को इतनी कम उम्र में सीनियर स्तर पर राज्य का प्रतिनिधित्व करने का मौका दिया।' राजस्थान रॉयल्स ने पिछले साल मेगा नीलामी में 1.10 करोड़ रुपये खर्च करके वैभव की प्रतिभा में निवेश किया, जो उनके आधार मूल्य 30 लाख रुपये से लगभग चार गुना अधिक था। वह पहले ही भारत अंडर-19 के लिए खेल चुके हैं और जनवरी 2024 में मुंबई के खिलाफ प्रथम श्रेणी में डेब्यू कर चुके हैं। राजस्थान रॉयल्स ने वैभव को नागपुर में ट्रायल के लिए बुलाया था। वहां फ्रेंचाइजी के बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ इस विस्फोटक बल्लेबाज की प्रतिभा से काफी प्रभावित हुए थे। विक्रम ने भी मैच के बाद वैभव की जमकर तारीफ की है। 14 वर्षीय बल्लेबाज ने अपनी पारी के दौरान गुजरात टाइटंस के ईशांत शर्मा, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, वॉशिंगटन सुंदर, साथ ही अफगानिस्तान के राशिद खान और करीम जानत जैसे अंतरराष्ट्रीय गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। राठौड़ ने कहा, 'हम पिछले कुछ महीनों से उन्हें नेट्स पर देख रहे हैं। हमें पता था कि वह क्या करने में सक्षम हैं और वह कौन से शॉट खेल सकते हैं। लेकिन खचाखच भरे स्टेडियम में और इस तरह की स्थिति में वास्तव में अच्छे गेंदबाजी आक्रमण के खिलाफ ऐसा करना, यह खास क्षण था।

वनडे में सबसे तेज 500 रन बनाने वाली भारतीय बनीं प्रतिका, लगातार पांच पारियों में बनाए 50+ स्कोर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। त्रिकोणीय सीरीज के दूसरे मुकाबले में प्रतिका रावल ने वनडे में 500 रन पूरे कर लिए। उन्होंने अपने करियर की आठवीं पारी में शानदार अर्धशतक के साथ यह कारनामा किया और इंग्लैंड

की चार्लोट एडवर्ड्स को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने नौ पारियों में वनडे में 500 रन पूरे किए थे। भारतीय महिला टीम की युवा बल्लेबाज प्रतिका रावल इन दिनों श्रीलंका दौरे पर हैं और त्रिकोणीय सीरीज में खेलती दिख रही हैं। मंगलवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मुकाबले में 24 वर्षीय बल्लेबाज ने अर्धशतकीय पारी के साथ बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली। वह वनडे में सबसे कम पारियों में 500 रनों का आंकड़ा छूने वाली पहली भारतीय महिला बल्लेबाज बन गईं। त्रिकोणीय सीरीज के दूसरे मुकाबले में प्रतिका रावल ने वनडे में 500 रन पूरे कर लिए। उन्होंने अपने करियर की आठवीं पारी में शानदार अर्धशतक के साथ यह कारनामा किया और इंग्लैंड की चार्लोट एडवर्ड्स को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने नौ पारियों में वनडे में 500 रन पूरे किए थे। सलामी बल्लेबाज ने 91 गेंदों का सामना किया और 78 रनों की धमाकेदार पारी खेली। इस दौरान उनके बल्ले से सात चौके और एक छक्का निकला। प्रतिका ने भारत के लिए पिछले साल दिसंबर में डेब्यू किया था। करियर के पहले ही मैच में उन्होंने नाबाद 50 रनों की पारी खेलकर अपने इरादे जाहिर कर दिए थे। दाएं हाथ की बल्लेबाज ने अब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लगातार पांचवां अर्धशतक लगाकर पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज की बराबरी कर ली। दिग्गज बल्लेबाज ने पांच पारियों में लगातार 50ढ़ स्कोर बनाए थे। अब यही कारनामा प्रतिका ने भी किया है।

इंग्लैंड ने मुंबई इंडियंस की इस खिलाड़ी को सौंपी बड़ी जिम्मेदारी, महिला टीम का कप्तान बनाया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सिवर हीथर नाइट की जगह महिला इंग्लैंड टीम की कमान संभालेंगी। नाइट ने लगातार खराब परिणामों के बाद कप्तान पद से इस्तीफा दे दिया था। इंग्लैंड एंड

वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने नेट सिवर ब्रंट को इंग्लैंड की महिला टीम का कप्तान नियुक्त किया है। ब्रंट डब्ल्यूपीएल में मुंबई इंडियंस का प्रतिनिधित्व करती है और वह हीथर नाइट की जगह महिला इंग्लैंड टीम की कमान संभालेंगी। नाइट ने लगातार खराब परिणामों के बाद कप्तान पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने नौ साल तक टीम की कमान संभाली थी।इंग्लैंड पिछले साल टी20 विश्व कप के ग्रुप चरण में बाहर हो गया था और इस साल बहुप्रारूप (टेस्ट, वनडे और टी20) में खेली गई एशेज सीरीज में ऑस्ट्रेलिया से हार गया था। इंग्लैंड की पूर्व कप्तान चार्लोट एडवर्ड्स को इस महीने की शुरुआत में जॉन लुईस की जगह टीम का मुख्य कोच नियुक्त करने के बाद सिवर ब्रंट को टीम की कप्तानी सौंपी गई है। सिवर ब्रंट ने टीम की कमान मिलने के बाद कहा, मैं इंग्लैंड की महिला टीम की कप्तान की भूमिका निभाने पर वास्तव में गर्व महसूस कर रही हूं। मैं इस टीम को सफलता की ओर ले जाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करुंगी।

अक्षर पटेल ने अंगुली की चोट पर दी जानकारी, सनराइजर्स के खिलाफ मैच से पहले फिट होने की उम्मीद जताई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। अक्षर को फील्डिंग के दौरान अंगुली में चोट लगी थी और अब उन्होंने इसके बारे में

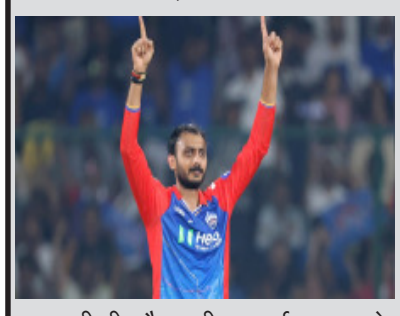

जानकारी दी और उम्मीद जताई कि वह सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच तक फिट हो जाएंगे। अंगुलीअक्षर को फील्डिंग के दौरान अंगुली में चोट लगी थी और अब उन्होंने इसके बारे में जानकारी दी और उम्मीद जताई कि वह सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच तक फिट हो जाएंगे। अक्षर ने कहा, गेंद रोकने के दौरान जब मैंने डाइव मारी तो मेरी अंगुली छिल गई, लेकिन अच्छी बात यह है कि तीन-चार दिन का ब्रेक है और मुझे उम्मीद है कि मैं समय से इससे उबर जाऊंगा। दिल्ली ने इस सत्र में अबतक कुल चार मुकाबले अपने घर में खेले हैं। इनमें उन्होंने तीन मैच गंवाए जबकि एक में उन्हें सुपरओवर में जीत मिली है। वहीं, घर से बाहर अक्षर पटेल की टीम ने छह में से पांच मुकाबले जीते जबकि एक में उन्हें शिकस्त मिली है। मंगलवार को इस जीत के साथ कोलकाता ने अपनी प्लेऑफ की आस बरकरार रखी है। उनके खाते में नौ अंक हो गए और उनका नेट रन रेट 0.271 हो गया है। वहीं, दिल्ली 12 अंक और 0.362 का नेट रन रेट लेकर चौथे स्थान पर है।

आईसीसी ने लगाया भारतीय टीम पर जुर्माना, श्रीलंका के खिलाफ मैच में हुई इस गलती की मिली सजा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। आईसीसी ने मंगलवार को भारतीय टीम पर मैच फीस का पांच प्रतिशत जुर्माना लगाया है। क्रिकेट की वैश्विक संस्था ने इसकी जानकारी देते हुए कहा- खिलाड़ियों और टीम के सहयोगी कर्मियों के लिए आईसीसी आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 (न्यूनतम ओवर गति से संबंधित) के तहत खिलाड़ियों पर उनके द्वारा आवंटित समय में गेंदबाजी करने में विफल रहने पर प्रत्येक ओवर के लिए उनकी मैच फीस का पांच प्रतिशत जुर्माना लगाया जाता है। श्रीलंका के खिलाफ त्रिकोणीय सीरीज के पहले मुकाबले में धीमी ओवर गति के कारण अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने भारतीय टीम पर जुर्माना लगाया है। यह मुकाबला रविवार को कोलंबो में ही खेला गया था जिसे हरमनप्रीत कौर की टीम ने नौ विकेट से जीता था।आईसीसी ने मंगलवार को भारतीय टीम पर मैच फीस का पांच प्रतिशत जुर्माना लगाया है। क्रिकेट की वैश्विक

संस्था ने इसकी जानकारी देते हुए कहा- खिलाड़ियों और टीम के सहयोगी कर्मियों के लिए आईसीसी आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 (न्यूनतम ओवर गति से संबंधित) के तहत खिलाड़ियों पर उनके द्वारा आवंटित समय में गेंदबाजी करने में विफल रहने पर प्रत्येक ओवर के लिए उनकी मैच फीस का पांच प्रतिशत जुर्माना लगाया जाता है। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने अपराध और प्रस्तावित जुर्माने को स्वीकार कर लिया, इसलिए औपचारिक सुनवाई की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी। मैदानी अंपायर अन्ना हैरिस और निमाली परेरा, तीसरे अंपायर लिंडन हैनिबल और चौथे अंपायर डेदुनु डी सिल्वा ने आरोप तय किए। त्रिकोणीय सीरीज के शुरुआती दोनों मैच भारतीय टीम ने जीते हैं। रविवार को कोलंबो में बारिश के कारण पहला मैच 39 ओवर का कर दिया गया था। टॉस हारकर बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की महिला टीम ने 38.1 ओवर में 10 विकेट खोकर 147 रन बनाए। जवाब में भारत ने 29.4 ओवर में एक विकेट गंवाकर 149 रन बनाए और 56 गेंदों के शेष रहते मुकाबला अपने नाम कर लिया। ऑफ स्पिनर राणा और बाएं हाथ की स्पिनर चरणी ने आठ-आठ ओवर के अपने कोटे को पूरा करते हुए क्रमशः 31 रन पर तीन और 26 रन पर दो विकेट चटकाए। अनुभवी ऑफ स्पिनर दीप्ति शर्मा ने भी 5.1 ओवर में 22 रन देकर दो विकेट चटकाए। वहीं, त्रिकोणीय सीरीज के दूसरे मुकाबले में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 15 रन से हराया। मंगलवार को कोलंबो में खेले गए मुकाबले में प्रतिका रावल की अर्धशतकीय पारी के दम पर भारत ने 50 ओवर में छह विकेट खोकर 276 रन बनाए।

राशि फल

मेष कुछ कार्य जिसकी पिछले कुछ दिनों से प्लानिंग चल रही है, आज शुरू हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक स्थिति में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन की योग बन रहे हैं

वृषभ आज का दिन अच्छा है। परिवार में कोई नया सदस्य आ सकता है। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। व्यापार आदि में सहयोगी पार्टनर के माध्यम से आय के नए स्रोत बनेंगे

मिथुन किसी कार्य विशेष को लेकर आज यात्रा आदि पर बाहर जा सकते हैं। यात्रा में सावधानी बरतें, नहीं तो आपको नुकसान हो सकता है। साथ ही परिवार में किसी अपने के स्वास्थ्य से आप चिंतित रह सकते हैं।

कर्क आज आप व्यर्थ की भागदौड़ से परेशान हो सकते हैं। आपका मन अशांत रहेगा। कार्य की अधिकता के कारण थकावट आदि महसूस होगी।

सिंह आज आप मानसिक रूप से उलझे रहेंगे। किसी बात को लेकर परिवार में परेशानी बढ़ सकती है, लेकिन आप अपनी कुशलता से उसे हल करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कन्या नौकरी आदि के लिए यदि प्रयास कर रहे हैं तो, आज आपको सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य आपका ठीक रहेगा, परंतु परिवार में माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

तुला आज आपका कोई महत्वपूर्ण कार्य न होने से आप मानसिक तौर से परेशान रह सकते हैं। आर्थिक स्थिति के कारण आपको किसी से मदद मांगनी पड़ सकती है। व्यापार-व्यवसाय में भी इस समय गिरावट महसूस होगी।

वृश्चिक आज आप पतनी के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशान रहेंगे। परिवार के लोग सहयोग करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में अपने साथियों के विरोध के कारण आपको बड़ा नुकसान हो सकता है।

धनु स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। साथ ही नौकरी आदि में अधिकारी वर्ग से मतभेद बढ़ने से आपकी परेशानी बढ़ेगी।

मकर आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। किसी अपने के द्वारा आपको कार्यक्षेत्र में बड़ा काम मिल सकता है, जिस कारण मन प्रसनन रहेगा।

कुंभ आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

मीन मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

श्रीलंका के बाद द. अफ्रीका पर भी भारी पड़ीं बेटियां, 15 रन से जीता मैच; प्रतिका-राणा चमकीं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। कोलंबो में खेले गए मुकाबले में प्रतिका रावल की अर्धशतकीय पारी के दम पर भारत ने 50 ओवर में छह विकेट खोकर 276 रन बनाए। जवाब में दक्षिण अफ्रीका 49.2 ओवर में 261 रन पर ऑलआउट हो गई। उनके लिए तजमीन ब्रिट्स ने सर्वाधिक 109 रन बनाए। श्रीलंका पर नौ विकेट से जीत के बाद भारतीय महिला टीम ने त्रिकोणीय सीरीज के दूसरे मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 15 रन से हरा दिया। मंगलवार को कोलंबो में खेले गए मुकाबले में प्रतिका रावल की अर्धशतकीय पारी के दम पर भारत ने 50 ओवर में छह विकेट खोकर 276 रन बनाए। जवाब में दक्षिण अफ्रीका 49.2 ओवर में 261 रन पर ऑलआउट हो गई। उनके लिए तजमीन ब्रिट्स ने सर्वाधिक 109 रन बनाए। स्नेह राणा ने पांच विकेट लिए जबकि अरुंधति रेड्डी, श्री चरणी और दीप्ति शर्मा ने एक-एक सफलता हासिल की।लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका को लाउरा वोलवार्ड्ट और तजमीन ब्रिट्स ने अच्छी शुरुआत दिलाई थी। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 140 रनों की विशाल साझेदारी हुई। लाउरा 43 रन बनाकर आउट हो गईं। इस मैच में भारतीय गेंदबाजों का दबदबा रहा। एक छोर तजमीन रन बना रहीं थीं, लेकिन उन्हें दूसरी छोर से साथ नहीं मिल रहा था। इसके बावजूद सलामी बल्लेबाज ने अपना शतक पूरा कर लिया। वह 107 गेंदों में 13 चौके और तीन छक्के की मदद से 109 रन बनाकर आउट हुईं। उनके अलावा एनेरी डर्कसन ने 30, सुनी लुस ने 28 और क्लो ट्रॉयन ने 18 रन बनाए। वहीं, लारा नौ, कराबो मीसो सात, क्लास दो, लाबा आठ रन बनाकर आउट हुईं। वहीं, नादिन डी क्लार्क और आयाबोंगा खाका अपना खाता भी नहीं खोल पाईं। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारत को प्रतिका रावल और स्मृति मंधाना ने अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 83 रन की साझेदारी हुई। मंधाना पांच चौके की मदद से 36 रन बनाकर आउट हुईं। इसके बाद रावल को हरलीन देओल का साथ मिला। दोनों ने 73 गेंदों में 68 रन जोड़े। लाबा ने सलामी बल्लेबाज प्रतिका को बोल्ड किया। वह 91 गेंदों में 78 रन बनाकर आउट हुईं। उन्होंने लगातार पांचवीं पारी में 50 से ज्यादा का स्कोर बनाया। वहीं, हरलीन 29 रन बनाने में कामयाब रहीं। उनके अलावा जेमिमा रोड्रिग्स ने 41, ऋचा घोष ने 24 और दीप्ति शर्मा ने नौ रन बनाए। कप्तान हरमनप्रीत कौर 41 और काश्वी गौतम पांच रन बनाकर नाबाद रहीं। दक्षिण अफ्रीका के लिए लाबा ने दो विकेट लिए जबकि आयाबोंगा, क्लास, नादिन डी क्लार्क और एनेरी डर्कसन को एक-एक सफलता मिली।

सम्पादकीय

दोहरे लाभ वाला बड़ा फैसला, सिंधु जल समझौते का स्थगन आतंक के खिलाफ त्वरित कूटनीतिक प्रतिक्रिया

पहलगाम आतंकी हमले के बाद उठाए गए जवाबी कदमों में सबसे अधिक चर्चा 1960 में हुए सिंधु जल समझौते के स्थगन की है। पाकिस्तान के साथ प्रत्यक्ष-परोक्ष युद्धों और निरंतर आतंकी हमलों के बाद भी भारत ने कभी इस समझौते से कदम पीछे खींचने का नहीं सोचा, जिससे उसे शायद ही कोई लाभ मिल पा रहा था। ऐसे में उसे स्थगित करने संबंधी भारत के दांव को महज त्वरित कूटनीतिक प्रतिक्रिया नहीं, अपितु राष्ट्रीय संसाधनों के नियंत्रण एवं उपयोग की रणनीति का नए सिरे से रेखांकन कहना कहीं अधिक उचित होगा। इसके दूरगामी परिणाम निकलेंगे, जिससे जम्मू-कश्मीर और पंजाब में पानी की आपूर्ति-उपलब्धता सुधरेगी। तात्कालिक दौर पर भारत का यह कदम भले ही प्रतीकात्मक लगे, लेकिन दीर्घकाल में यह सिंधु, चिनाब और झेलम जैसी नदियों पर बहुउद्देश्यीय बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के विकास में बहुत सहायक बनेगा। इस संधि से जुड़ी बाधाओं से मुक्ति के बाद देश को घरेलू फायदे के लिए पानी के उपयोग की गुंजाइश मिल गई है। यह नीतिगत परिवर्तन पश्चिमी नदियों के पानी को पूर्वी नदी प्रवाह तंत्र विशेषकर रावी और ब्यास से जोड़ने की राह खोलेगा, जिनका पानी पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में खेती के लिए जीवनरेखा जैसा है। यदि सिंधु जल संधि के स्थगन को अपेक्षित रूप से अमल में लाया गया तो यह कदम राज्यों के बीच पानी को लेकर विवादों पर विराम लगाने के साथ ही नहर सिंचित कृषि की कायापलट करने वाला सिद्ध हो सकता है। संधि की स्थगन अवधि तमाम लंबित प्राथमिकताओं की पूर्ति का अवसर बन सकती है। संधि के प्रविधानों के चलते अधर में अटकी पनबिजली परियोजनाओं की संभावनाएं तलाशी जाएं। संस्थागत क्षमताओं एवं तकनीकी विशेषज्ञता के चलते एनएचपीसी को यह जिम्मा सौंपा जा सकता है। सिंधु की मुख्य धारा पर भी बहुउद्देशीय परियोजनाएं विकसित करने पर मंथन हो। इससे भारत के दोहरे हितों की पूर्ति होगी। एक तो भारत के विकास संबंधी एजेंडे को गति मिलेगी तो दूसरी ओर भू-राजनीतिक परिवेश में पाकिस्तान को कड़ा संदेश भी मिलेगा। इस संधि के अंतर्गत अभी तक भारत केवल 5.6 प्रतिशत पानी का ही उपयोग कर पा रहा था। चूंकि अब यह संधि स्थगित हो गई है, इसलिए बरसर बांध जैसी परियोजनाएं गति पकड़ सकती हैं। इसके जरिये 45,000 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इसी तरह, चिनाब से दक्षिण कश्मीर के बागानों में सौर ऊर्जा के उपयोग से लिफ्ट इरिगेशन के जरिये 18,000 हेक्टेयर भूमि को उच्च-मूल्य वाली फसलों के क्षेत्र के रूप में रूपांतरित किया जा सकता है। पश्चिमी नदियों के पानी को मोड़ने का असर बहुत दूरगामी होगा। इस साल जून से परिचालन में आने वाली शाहपुर कंडी और प्रस्तावित प्रस्तावित परियोजनाओं के जरिये ही 3.8 से चार मिलियन एकड़ फीट पानी रावी-ब्यास नदी तंत्र में बढ़ेगा। इससे पंजाब में नहर सिंचाई का दायरा 7,80,000 हेक्टेयर से बढ़कर 11 लाख हेक्टेयर हो जाएगा। राजस्थान के लिए रावी-ब्यास के पानी की पात्रता के 80 प्रतिशत हिस्से की पूर्ति हो जाएगी। हरियाणा के साथ पानी की साझेदारी के समीकरण सुधरेंगे। इस राह में जोखिम के साथ ही भू-राजनीतिक एवं पारिस्थितिकीय पहलुओं का भी ध्यान रखना जरूरी है। पाकिस्तान पश्चिमी नदियों पर ही व्यापक रूप से निर्भर है। ऐसी स्थिति में पानी बंद होने से उसकी 1.2 करोड़ एकड़ कृषि भूमि प्रभावित हो सकती है। खासतौर से पंजाब और सिंध प्रांत मुश्किलों में घिर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, चिनाब और झेलम पर विशाल बांध बनाने से तलछट की कमी पंजाब के जलोढ़ मैदानों की उर्वरता पर बुरा असर डाल सकती है। इससे निपटने के लिए वहां खेती के तौर-तरीके बदलने पड़ सकते हैं। यह सब संभव हुआ तो संधि स्थगित करने का भारत का दांव पाकिस्तान में बैठे आतंक के आकाओं को करारा जवाब और इसका सूचक भी होगा कि उससे निपटने के लिए भारत के पास विकल्पों की कोई कमी नहीं है। भारत के लिए आवश्यक है कि वह इस संधि स्थगन के आलोक में अपनी प्राथमिकताएं तय करके उन पर अमल करने की दिशा में आगे बढ़े। इसमें पहली प्राथमिकता बरसर और सावलकोट बांध परियोजनाओं के निर्माण एवं परिचालन की होनी चाहिए।

दिसंबर से गैर-कश्मीरियों पर बड़े हमले की फिराक में थे पाकिस्तानी दहशतगर्द; हाथ लगी सीक्रेट जानकारी

पहलगाम हमले में शामिल पाकिस्तानी आतंकियों को लेकर एक के बाद एक खुलासे हो रहे हैं। इस बीच एक सीक्रेट जानकारी सुरक्षा एजेंसियों के हाथ लगी है। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में जिन 3 संदिग्ध आतंकियों के स्कैच जारी हुए थे, उसमें एक की पहचान पाकिस्तानी आतंकी हाशिम मूसा के रूप में हुई है। साथ ही जांच एजेंसियों को यह भी पता लगा है कि मूसा दिसंबर से ही गैर कश्मीरियों पर किसी बड़े हमले की फिराक में था।खुफिया एजेंसियों की जांच के दौरान पहलगाम हमले में दो पाकिस्तानी आतंकियों हाशिम मूसा उर्फ सुलेमान और अली भाई के शामिल होने की जानकारी सामने आई है। इनमें से हाशिम मूसा पाकिस्तानी फौज की स्पेशल फोर्स का पैरा कमांडो रहा है और अब प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-ताइबा का सदस्य है। वह पिछले साल अक्तूबर में गंदरबल और बारामूला हमले में भी शामिल था।खुफिया एजेंसियों को पता चला है कि वह दिसंबर से कश्मीर में गैर-कश्मीरियों पर किसी बड़े हमले की फिराक में था। हमलावरों में शामिल हाशिम मूसा का कनेक्शन सीधे तौर पर पाकिस्तानी सुरक्षा बलों से रहा है। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, पाकिस्तानी सेना के स्पेशल सर्विस ग्रुप (एसएसजी) ने पैरा-कमांडो रहे मूसा को भारत पर हमले में मदद करने के इरादे से ही लश्कर में शामिल कराया था। हाशिम मूसा अक्तूबर 2024 में गांदरबल के गगनगिर और बारामूला के बूटा पथरी में हुए आतंकी हमलों में भी हाशिम मूसा शामिल रहा है। गगनगिर में छह गैर-स्थानीय लोग और एक डॉक्टर दहशतगर्दों का निशाना बने थे और बूटा पथरी में दो भारतीय सैन्यकर्मी बलिदान हो गए और दो पोर्टर को भी अपनी जान गंवानी पड़ी थी। इन घटनाओं में पाकिस्तान में प्रशिक्षित दो स्थानीय आतंकियों जुनैद अहमद और अरबाज मीर का नाम सामने आया था जिन्हें नवंबर और दिसंबर 2024 में सुरक्षा बलों ने अलग-अलग मुठभेड़ों में मार गिराया था। इसके बाद से ही मूसा कश्मीर घाटी में बड़े हमले की तैयारी में जुट गया था।मूसा के पाकिस्तानी सेना से जुड़े होने की जानकारी पहलगाम हमले के बाद हिरासत में लिए गए संदिग्ध ओवरग्राउंड वर्कर्स (ओजीडब्ल्यू) यानी आतंकियों के स्थानीय सहयोगियों से पूछताछ के दौरान सामने आई है। इस तथ्य ने एक बार फिर पाकिस्तान का नापाक चेहरा उजागर कर दिया है। इन्हीं कश्मीरी ओवरग्राउंड वर्कर्स ने उन आतंकियों की रसद की व्यवस्था करके और टोही में मदद की थी। पहलगाम आतंकी हमले में आईएसआई की भूमिका के साथ-साथ कश्मीर में पहले हुए कई हमलों में भी मूसा की भूमिका रही है। कश्मीर में अक्टूबर 2024 में गांदरबल के गागनगीर में हुए हमले में शामिल था। इसमें छह गैर-स्थानीय लोग और एक डॉक्टर मारे गए थे। इसके अलावा, बारामूला के बुटा पथरी में हुए हमले में दो सेना के जवान और दो सेना के पोर्टर मारे गए थे। इस हमले में मूसा की भूमिका रही है। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि मूसा का सैन्य अतीत पहलगाम हमले में पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई की संलिप्तता का स्पष्ट सबूत है। यह पहला मौका नहीं जब किसी पाकिस्तानी एसएसजी कमांडो की इस तरह की घटना में संलिप्तता सामने आई है। एसएसजी पैरा-कमांडो को गैर-परंपरागत युद्ध का कड़ा प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें ऐसे हमलों के लिए शारीरिक और मानसिक तौर पर तैयार किया जाता है और ये अत्याधुनिक हथियार चलाने में भी सक्षम होते हैं।मूसा तीनों हमलों में एक आम अपराधी के रूप में उभरा है। पाकिस्तान में प्रशिक्षित दो अन्य स्थानीय आतंकवादी जुनैद अहमद भट और अरबाज मीर भी गगनगीर और बूटा पथरी हमलों में शामिल थे, लेकिन नवंबर और दिसंबर 2024 में सुरक्षा बलों के साथ अलग-अलग मुठभेड़ों में उन्हें मार गिराया गया था। इन दोनों आतंकियों को मारे जाने से बाद से मूसा कश्मीर में बाहरी लोगों को निशाना बनाने के आतंकी मिशन को आगे बढ़ाने का काम कर रहा है।पहलगाम हमले के बाद नियंत्रण रेखा पर लगातार गोलीबारी कर रहा पाकिस्तान साइबर स्पेस में भारतीय संप्रभुता के उल्लंघन की नाकाम कोशिशों में जुटा है। इंटरनेट ऑफ खिलाफत यानी आईओके के नाम से काम कर रही पाकिस्तान की साइबर आर्मी ने भारतीय सेना पर साइबर हमले की कोशिश की लेकिन वास्तविक समय में सेंधमारी का पता लगाकर इसे नाकाम कर दिया गया।आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, आईओके हैकर ने कुछ महत्वपूर्ण वेबसाइट के पेजों को अपना निशाना बनाकर ऑनलाइन सेवाएं बाधित करने और व्यक्तिगत जानकारी हासिल करने की कोशिश की, लेकिन बहु-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था के कारण न केवल इस सेंधमारी को नाकाम कर दिया गया लेकिन वास्तविक समय में इनके स्रोत का भी पता लगा लिया गया। सूत्रों के मुताबिक, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय नेटवर्क को निशाना बनाने की चार कोशिशें की गईं।सूत्रों का कहना है कि हमले का लक्ष्य आर्मी पब्लिक स्कूल (एपीएस) श्रीनगर और एपीएस रानीखेत की वेबसाइटों को भड़काऊ सामग्री से भर देना था। इसी तरह सेना कल्याण आवास संगठन (एडब्ल्यूएचओ) डाटाबेस में सेंध लगाने की कोशिश हुई और भारतीय वायु सेना के प्लेसमेंट संगठन पोर्टल में भी सेंधमारी की कोशिश हुई। लेकिन किसी भी स्तर पर वर्गीकृत नेटवर्क प्रभावित नहीं हुआ। राष्ट्रीय नेटवर्क को अभेद्य पाकर कुछ स्कूलों की साइट को निशाना बनाने की कोशिश की गई।वहीं, वर्ष 2001 में आतंकवाद का रास्ता छोड़ कर मुख्य धारा में लौटने वाले रियासी के नबाबाद विजयपुर के मो. कालू उर्फ शकूर आतंकवादियों से लोहा लेने के लिए तैयार हैं। पहलगाम में आतंकियों की ओर से निहत्थे पर्यटकों पर किए गए हमले को लेकर उनके मन में बहुत गुस्सा है।कभी हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकवादी रहे कालू ने कहा कि जिन लोगों ने भी आतंकवाद का रास्ता छोड़ कर मुख्य धारा को अपनाया है, वे जिले के पहाड़ी इलाकों के चप्पे-चप्पे से अच्छी तरह वाकिफ हैं। उनको सभी रास्ते और आतंकियों के आने-जाने के रूट भी पता हैं। मुख्य धारा में लौट चुके ऐसे आतंकियों को सरकार की तरफ से हथियार उपलब्ध करवाए जाने चाहिए ताकि वे लोग दहशतगर्दों का मुकाबला कर उन्हें ढेर कर सकें। उन्होंने कहा कि पहलगाम जैसी घटना दोबारा नहीं हो, इसके लिए वह आतंकियों से लड़ने को तैयार है। मौजूदा समय मोहम्मद कालू मदरसे में बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं।

नींद में दिमाग कैसे काम करता है पर्याप्त नींद के अभाव में मनोभ्रंश का जोखिम अधिक

हाल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, जिन लोगों की पर्याप्त नींद नहीं होती, उनको मनोभ्रंश का जोखिम ज्यादा होता है। तीस-चालीस की उम्र में नींद काफी बाधित होती है, इससे स्मृति व काम की क्षमता प्रभावित होती है, जिसका असर एकाध दशक बाद दिखता है। ऑस्ट्रेलियाई मनोवैज्ञानिक पेज मैथ्यू कहते हैं, 'गहरी नींद और आरईएम आपके दिमाग को थकान और तनाव से 'ठीक करने' तथा स्मृति को मजबूत करने में मदद करती हैं।' अच्छी नींद इस?पर निर्भर नहीं करती कि आप रात में कितने घंटे सोए। अच्छी नींद का मतलब है कि आप सुबह उठकर तरोताजा महसूस करें और दैनिक काम के लिए तैयार हो जाएं। अच्छी नींद स्वस्थ दिमाग के लिए महत्वपूर्ण है। जिन लोगों की नींद बाधित होती है, उनमें डिमेंशिया (मनोभ्रंश) का उच्च जोखिम रहता है, बजाय उन लोगों के, जिन्हें नींद संबंधी कोई शिकायत नहीं है।खराब नींद कई तरह से दिमाग को नुकसान पहुंचाती है। एक अध्ययन में पता चला है कि तीस-चालीस की उम्र में लोगों की नींद काफी बाधित होती है, इससे स्मृति व काम करने की क्षमता प्रभावित होती है, जिसका असर एकाध दशक बाद दिखता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि गहरी नींद व रैपिड आई मूवमेंट (आरईएम) दिमागी स्वास्थ्य के लिए बेहतर हैं। बीते महीने प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, वैज्ञानिकों ने एमआरआई जांच से पता किया कि गहरी नींद और आरईएम में कमी से तेरह से सत्रह साल बाद अल्जाइमर रोग जैसे लक्षण देखने को मिले।जब आप सोते हैं, तो आपका दिमाग लगातार अलग-अलग चरण पूरे करता है : हल्की नींद के दो चरण, जब शरीर आराम करता है और हृदय गति व तापमान कम होता है या जब नींद धीमी होती है और दिमागी गतिविधि मंद पड़ जाती है।

सारी दुनिया की निगाहें वेटिकन पर, भारत सहित विश्व को है नए पोप का इंतजार

पोप यीशु मसीह के प्रेरित संत पेत्रुस का उत्तराधिकारी माना जाता है। कैथोलिक विश्वास के अनुसार, पोप को ईश्वर की इच्छा के अनुसार चर्च का मार्गदर्शन करने का दैवीय अधिकार प्राप्त है। वे विश्वभर के कैथोलिकों के लिए आध्यात्मिक पिता और विश्वास के संरक्षक हैं। रोमन कैथोलिक चर्च, विश्व के सबसे बड़े ईसाई समुदाय का आध्यात्मिक केंद्र, अपने सर्वोच्च धर्मगुरु पोप के चयन की प्रक्रिया में प्रवेश कर रहा है। यह एक ऐसा क्षण है जो न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैश्विक दृष्टिकोण से भी ऐतिहासिक है। भारत, जहां लगभग 3 करोड़ ईसाई निवास करते हैं, सहित विश्वभर के अरबों लोग इस प्रक्रिया पर अपनी नजरें टिकाए हुए हैं। वेटिकन ने घोषणा की है कि पोप फ्रांसिस की 88 वर्ष की आयु में मृत्यु के बाद, उनके उत्तराधिकारी का चयन करने के लिए कॉन्क्लेव 7 मई को शुरू होगा। यह कॉन्क्लेव रोमन कैथोलिक चर्च के भविष्य को आकार देगा और वैश्विक धार्मिक परिदृश्य पर गहरा प्रभाव डालेगा।पोप यीशु मसीह के प्रेरित संत पेत्रुस का उत्तराधिकारी माना जाता है। कैथोलिक विश्वास के अनुसार, पोप को ईश्वर की इच्छा के अनुसार चर्च का मार्गदर्शन करने का दैवीय अधिकार प्राप्त है। वे विश्वभर के कैथोलिकों के लिए आध्यात्मिक पिता और विश्वास के संरक्षक हैं। पोप का पद न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक और वैश्विक मुद्दों पर भी प्रभाव डालता है, क्योंकि वे शांति, न्याय और मानवता के लिए आवाज उठाते हैं। पोप को सेंट पीटर का उत्तराधिकारी माना जाता है। रोमन कैथोलिक चर्च के सर्वोच्च आध्यात्मिक नेता होने के नाते उनका अत्यधिक महत्व हैं। ईसाई मान्यता के अनुसार, यीशु मसीह ने सेंट पीटर को अपनी कलीसिया (चर्च) का आधार बनाया और पोप इस पवित्र परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। वे विश्वभर के 1.4 अरब कैथोलिकों के लिए आस्था, एकता और मार्गदर्शन का प्रतीक हैं।दरअसल, पोप चर्च की शिक्षाओं को परिभाषित करते हैं और नैतिक व धार्मिक मुद्दों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनकी शिक्षाएं विश्वासियों के जीवन को आकार देती हैं तथा पवित्र सैक्रामेंट्स की रक्षा करते हैं और चर्च की पवित्र परंपराओं को बनाए रखते हैं। विभिन्न संस्कृतियों और देशों के कैथोलिकों को एक सूत्र में बांधने का कार्य पोप करते हैं। भारत जैसे बहु-सांस्कृतिक देश में, जहां ईसाई समुदाय विविधता में एकता का प्रतीक है, पोप का नेतृत्व सामुदायिक एकजुटता को बल देता है। पोप अन्य धर्मों के साथ संवाद को बढ़ावा देते हैं। भारत जैसे बहुधार्मिक देश में, जहां हिंदू, मुस्लिम, सिख और अन्य धर्मों के लोग सह-अस्तित्व में रहते हैं, पोप का यह प्रयास शांति और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करता है। सामाजिक न्याय, गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर पोप की आवाज वैश्विक मंच पर गूंजती है, जो न केवल कैथोलिकों, बल्कि सभी मानवता के लिए प्रेरणादायक है।कॉन्क्लेव में लगभग 130 कार्डिनल्स में से 100, जो 80 वर्ष से कम आयु के हैं, गुप्त मतदान के माध्यम से नए पोप का चयन करेंगे। दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता इस प्रक्रिया को जटिल बनाती है। 7 मई को सेंट पीटर बेसिलिका में मास के साथ शुरू होने वाला यह आयोजन सिस्टिन चैपल में मतदान के साथ आगे बढ़ेगा। प्रत्येक मतदान दौर के बाद, मतपत्रों को जलाया जाएगा और चिमनी से निकलने वाला धुआं विश्व को संदेश देगाः काला धुआं यदि सहमति नहीं बनी और सफेद धुआं जब नया पोप चुना जाएगा। भारत से लेकर विश्व के कोने-कोने तक, लोग इस धुएं का इंतजार करेंगे। कार्डिनल्स की तैयारी और चर्च के मुद्दे पोप फ्रांसिस की मृत्यु के बाद से कार्डिनल्स ने वेटिकन में बैठक शुरू कर दी हैं। ये बैठकें शोक समारोह की व्यवस्था के साथ-साथ चर्च के समक्ष चुनौतियों, जैसे विश्व और अन्य धर्मों के साथ संबंध, सुसमाचार प्रचार और चर्च में यौन शोषण जैसे गंभीर मुद्दों पर विचार-विमर्श के लिए हैं। वेटिकन के प्रवक्ता माटेओ ब्रूनी ने बताया कि कार्डिनल्स ने नए पोप में अपेक्षित गुणों पर भी चर्चा की। उम्मीदवारों की उम्र, देश और उनके विचार इस चयन में महत्वपूर्ण होंगे। कुछ कार्डिनल्स पोप फ्रांसिस के पादरी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना चाहेंगे।

जैव विविधता के खजाने

सुंदरी वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करते हैं। इसकी जटिल जड़ प्रणाली तटीय क्षेत्रों को चक्रवात और समुद्री तूफानों से सुरक्षा प्रदान करती है। सुंदरबन, विश्व का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन, अपनी समृद्ध जैव विविधता और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। इसका नाम जाते हैं। सुंदरी वृक्ष की उलझी हुई घनी जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद करती हैं, जिससे यह पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।सुंदरी वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करते हैं। इसकी जटिल जड़ प्रणाली तटीय क्षेत्रों को चक्रवात और समुद्री तूफानों से सुरक्षा प्रदान जलवायु परिवर्तन और 'टॉप डाइंग' रोग के कारण गिरावट आई है, जिससे इसे 'संकटग्रस्त' (ईएन) श्रेणी में रखा गया है। स्थानीय महिलाएं, विशेषकर वे जिनके पति बाघों द्वारा मारे गए हैं, सुंदरी वृक्षों के संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने में मदद मिल रही है।मेरा यह अनुभव बेहद सुंदर किनारों पर फैली सुंदरी वृक्षों की सुंदरता मन मोह लेती है। इन वृक्षों की मिट्टी से निकली जड़ें और समुद्र की लहरों से टकराते दृश्य अत्यंत मनोहारी होते हैं। यहां जल, थल और आकाश- तीनों जगहों के जीव-जंतु एक साथ देखने को मिलते हैं।बोट पर रहते हुए ऐसा महसूस होता है मानो आप दुनिया की भीड़ से कटकर

यहां प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले सुंदरी वृक्षों (हेरिटिएरा फोमेस) के कारण पड़ा है। यह वन यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है.पारंपरिक चिकित्सा में सुंदरी वृक्ष का उपयोग मधुमेह, यकृत विकार, पाचन समस्याओं और त्वचा रोगों के उपचार में किया जाता है। इन वृक्षों में एंटीनोसिसेप्टिव, एंटीऑक्सीडेंट, एंटी हाइपरग्लाइसेमिक, एंटीमाइक्रोबियल, और एंटीकैंसर जैसी महत्वपूर्ण औषधीय गुण पाए करती है। यह वृक्ष खारे पानी में उगता है और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायता करता है। स्थानीय निवासी इस वन और इन वृक्षों को पवित्र मानते हैं। वे जंगल में प्रवेश करने से पहले बोनबीबी और दक्षिण राय की पूजा करते हैं, जिन्हें जंगल और उसके जीवों का संरक्षक माना जाता है। बाघों से बचाव के लिए लोग अपने सिर के पीछे मुखौटा बांधते हैं ताकि बाघ भ्रमित होकर हमला न करें।सुंदरी वृक्षों की संख्या में अत्यधिक कटाई, और दिल के करीब हैं। सुंदरवन की यात्रा अद्भुत अनुभव है।लगभग दस साल पहले मैंने सुंदरवन की यात्रा की थी, जो जीवन के सबसे अनमोल अनुभवों में से एक रहा। दो दिन की यह यात्रा बोट पर ही होती है- जहां दिन-रात उसी बोट में रहना होता है। यह आपको एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती है और बीच-बीच में सुंदरवन के प्रमुख स्पॉट्स पर घुमाती है।नदी में चलते हुए मगरमच्छ, डॉल्फिन जैसे जलजीवों को देखना और प्रकृति की गोद में खो गए हों - जहां सौंदर्य और रोमांच एक साथ आपका स्वागत में खड़े हैं।सुंदरबन की समृद्ध जैव विविधता और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए सुंदरी वृक्षों का संरक्षण आवश्यक है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी और जागरूकता के माध्यम से इन वृक्षों की रक्षा की जा सकती है, ताकि यह अनमोल धरोहर भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके।

अहमदाबाद में चंदोला झील के पास अवैध झुग्गी बस्तियों पर बुलडोजर एक्शन जारी, 2000 पुलिसकर्मी तैनात

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

अहमदाबाद। नगर निगम ने चंदोला झील क्षेत्र में अवैध झुग्गी-झोपड़ियों को हटाने के लिए बुलडोजर अभियान जारी है। 2,000 पुलिसकर्मी तैनात किए गए है। अधिकारियों के अनुसार, अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वाले बांग्लादेशियों को कब्जा दिलाने वाले मास्टरमाइंड महमूद पठान के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जा रही है। अहमदाबाद नगर निगम और पुलिस ने चंदोला झील क्षेत्र के पास बनी झुग्गी-झोपड़ियों को जमींदोज करने के लिए बुलडोजर अभियान जारी है। इस क्षेत्र से कुछ दिन पहले अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वाले बांग्लादेशियों को गिरफ्तार किया था। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस आयुक्त जी.एस मलिक ने कहा, यह अभियान अहमदाबाद नगर निगम की अगुवाई में चलाया जा रहा है। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) शरद सिंघल के नेतृत्व में करीब 2,000 पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया है। अभियान का जायजा लेने पहुंचे मलिक ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि शहर के सभी थानों को अलर्ट पर रखा गया है, क्योंकि चंदोला झील में तोड़फोड़ अभियान चल रहा है। यह मुस्लिम बहुल इलाका है।वहीं, शरद सिंघल ने बताया कि अहमदाबाद नगर निगम ने सुबह-सुबह अभियान शुरू किया, जिसमें पचास टीमें लगाई गईं और हर टीम के पास जेसीबी है। उन्होंने बताया, चंदोला झील क्षेत्र में आखिरी तोड़फोड़ अभियान 2009 में चला था। हाल ही में

अहमदाबाद नगर निगम के सर्वेक्षण से पता चला की सरकारी जमीन पर फिर से कब्जा किया गया है और झील के चारों ओर झोपड़ियां बना दी गई हैं। इन इलाकों में (सियासतनगर और बंगाली वास) में अवैध बांग्लादेशी रह रहे थे। पुलिस आयुक्त मलिक ने बताया कि चंदोला झील के पास सरकारी जमीन पर कब्जा कराने वाले मास्टरमाइंड महमूद पठान उर्फ बिल्लू बिहारी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जा रही है। उसने अवैध रूप से प्रवेश करने वाले बांग्लादेशी प्रवाशियों को किराए के मकान दिलवाने और आधार कार्ड बनवाने में मदद की। उन्होंने कहा, हमने अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) की मदद के लिए 2,000 पुलिसकर्मी और राज्य रिजर्व पुलिस (एसआरएफ) की 20 कंपनियां तैनात की हैं, ताकि चंदोला झील के सियासतनगर और बंगाली वास जैसे इलाकों में अवैध निर्माण हटाया जा सके। पूरे शहर की पुलिस को अलर्ट पर रखा गया है। यदि कोई कानून अपने हाथ में लेने की कोशिश करता है, तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि झील के पास रहने वाले अल्पसंख्यक समुदाय के लोग भी चाहते हैं कि अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई हो। मलिक ने बताया कि अधिकारियों ने पठान के झील किनारे बने अवैध फार्महाउस को भी गिरा दिया है। उन्होंने कहा, हम पठान के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू कर चुके हैं। उसने फर्जी रेंट एग्रीमेंट बनवाकर अवैध प्रवासियों को ठिकाना दिलाया और आधार कार्ड भी बनवाए। ऐसा भी शक है कि कुछ लोगों ने पासपोर्ट भी बनवाए हैं। उप नगर आयुक्त डी.सी. परमार ने बताया कि करीब 2,000 मकान अवैध रूप से बनाए गए और संपत्तियों की पहचान की गई है और दोपहर तक 50 फीसदी काम पूरा कर लिया गया। इससे पहले सोमवार को, पुलिस महानिदेशक विकास सहाय ने कहा कि पुलिस की छापेमारी के बाद गुजरात में अवैध रूप से रह रहे करीब 450 बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़ा गया, जबकि करीब 6,500 ऐसे लोगों को हिरासत में लिया गया, जिनके पड़ोसी देश के नागरिक होने का संदेह है।

33 साल में 57 बार झेला ट्रांसफर, अब नहीं होगा खेमका का तबादला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। 33 साल और 57 बार ट्रांसफर... वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अशोक खेमका का अब तबादला नहीं होगा। तेज तर्रार और विवादों से जुड़े रहने वाले वरिष्ठ आईएएस अशोक खेमका

आज सेवानिवृत्त होंगे। खेमका रॉबर्ट वाड्रा लैंड डील को रद्द कर चर्चा में आए थे। आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के तबादले की खबरें अक्सर आती हैं। मगर कुछ अफसरों के तबादलों की चर्चा खूब रहती है। हर तबादले के बाद नया विभाग, नई कार्यशैली और नए सहयोगियों के साथ काम करने की चुनौती। ऐसे ही अधिकारियों में से वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अशोक खेमका बुधवार को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। 33 साल के कार्यकाल में उनका 57 बार तबादला हुआ। वाड्रा-डीएलएफ लैंड डील का खुलासा करने के बाद खेमका राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में आ गए थे।2023 में अशोक खेमका ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सतर्कता विभाग में तैनात होने की पेशकश की थी। उन्होंने लिखा था कि मैं सेवा के अंत में भ्रष्टाचार के खिलाफ असली लड़ाई लड़ने का वादा करता हूं। कोई भी व्यक्ति, चाहे कितना भी प्रभावशाली हो, बख्शा नहीं जाएगा। 1991 बैच के आईएएस अधिकारी खेमका को साहसी फैसलों के लिए जाना जाता है। पूरी सेवा के दौरान औसतन हर छह माह में उनका विभाग बदला गया। खेमका अभी परिवहन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव (एसीएस) की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। 2012 में अशोक खेमका कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ट वाड्रा से जुड़े गुरुग्राम जमीन सौदे के म्यूटेशन को रद्द कर राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में आए थे।

बिहार के किसान का बेटा बना अध्यक्ष, उपाध्यक्ष के पिता मजदूर सचिव ओबीसी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। जेएनयू छात्र संघ चुनाव में सचिव के पद पर जीती मुंतेहा फातिमा ने जीत का परचम लहराया है। पिछला चुनाव आइसा, डीएसएफ, ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन (एआईएसएफ) और स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) ने मिलकर लड़ा था। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) छात्र संघ चुनाव में जीत का परचम लहराने वाले उम्मीदवार बेहद सामान्य परिवार से आते हैं। किसी के पिता किसान हैं तो कोई अनुसूचित जाति से है। छात्र संघ चुनाव में जीतने वाले सभी उम्मीदवार जेएनयू में पहले से छात्रों की आवाज उठाते रहे हैं। जेएनयू छात्र संघ में आइसा व डीएसएफ के गठबंधन ने शीर्ष तीन पदों पर और एबीवीपी को एक पद मिला।जेएनयू छात्र संघ चुनाव में अध्यक्ष पद पर जीतने वाले नीतीश कुमार बिहार के अररिया जिला स्थित शेखपुरा से हैं। अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) से आने वाले नीतीश के पिता किसान और मां गृहिणी है। बीएचयू से राजनीतिक विज्ञान में बीए की है। वर्ष 2020 में जेएनयू के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज में

एमए में दाखिला लिया। कोरोना काल में जेएनयू को वर्ष 2021 में खोलने की मांग को लेकर आंदोलन किया। नीतीश ने आइसा की जेएनयू इकाई के सचिव के तौर पर भी काम किया है। वर्ष 2021 में अपने बैच के लिए उन्हें छात्र एसएफसी प्रतिनिधि के रूप में चुना गया। जबकि 2023-24 में जेएनयू छात्र संघ चुनाव में स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज से काउंसलर के रूप में चुने गए। वर्ष 2023 के अगस्त में छात्रावास सहित कई दूसरे मुद्दों को लेकर 16 दिनों की भूख हड़ताल भी की।जेएनयू छात्र संघ चुनाव में उपाध्यक्ष पद पर जीतने वाली मनीषा हरियाणा के मजदूर वर्ग से ताल्लुक रखती हैं। वह अनुसूचित जाति से आती है। उनके पिता एक फैक्टरी में काम करते थे। जेएनयू के सेंटर फॉर ईस्ट एशियन स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज में पीएचडी कार्यक्रम में दाखिला लिया। हालांकि उसके लिए भी उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। कैंपस में आने के बाद से मनीषा ने अपने व्यक्तिगत संघर्षों को सामूहिक प्रतिरोध में बदल दिया। वर्ष 2019 में एसआईएस काउंसलर के रूप में निर्वाचित हुई। फीस वृद्धि के खिलाफ आंदोलन किया। जेएनयू छात्र संघ चुनाव में सचिव के पद पर जीती मुंतेहा फातिमा बिहार के पटना की रहने वाली है और ओबीसी मुस्लिम परिवार से आती हैं।

कैबिनेट बैठक में मंत्रियों ने की मांग-तबादलों के अधिकार बढ़ें, स्वैच्छिक तबादले स्लैब से अलग रखे जाएं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। मध्यप्रदेश सरकार की कैबिनेट बैठक में मंगलवार को ट्रांसफर नीति 2025 को लेकर अहम चर्चा हुई, जहां कई मंत्रियों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अपने स्थानांतरण संबंधी अधिकारों में विस्तार की मांग की। प्रदेश में 1 मई से 30 मई के बीच ट्रांसफर होंगे। कैबिनेट बैठक के दौरान मंगलवार को ट्रांसफर नीति 2025 पर चर्चा के समय मंत्रियों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अपने तबादला अधिकारों में विस्तार की मांग की। उनका कहना था कि बीते दो वर्षों से ट्रांसफर प्रक्रिया ठप रही है, जिससे उनके क्षेत्रों में राजनीतिक और जनप्रतिनिधि स्तर पर भारी दबाव बन गया है। जैसे ही बैठक में ट्रांसफर नीति का प्रजेंटेशन शुरू हुआ, उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार ने सुझाव दिया कि

स्थानांतरण की प्रतिशत सीमा यानी स्लैब बढ़ाई जाए, जिससे उन्हें अधिक अधिकार मिल सकें। इसके बाद अन्य मंत्रियों ने भी इस सुझाव का समर्थन किया। मंत्रियों का कहना था कि रोजाना उन्हें ट्रांसफर संबंधी 10 से ज्यादा आवेदन आते हैं और हर मामले में अनुशंसा करनी पड़ती है। सीएम समन्वय पोर्टल पर भी सैकड़ों आवेदन और उनकी अनुशंसाएं लंबित हैं। पार्टी कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि भी लगातार ट्रांसफर को लेकर दबाव बनाते हैं, जिससे असमंजस की स्थिति बनती है। मंत्रियों की यह भी मांग थी कि स्वैच्छिक तबादलों को निर्धारित प्रतिशत सीमा (स्लैब) से बाहर रखा जाए, ताकि अधिक संख्या में स्थानांतरण हो सकें। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने मंत्रियों की बातों को ध्यानपूर्वक सुना और इस पर विचार करने की सहमति दी। इसी कारण नीति को मंजूरी मिलने के बाद भी इसे सार्वजनिक नहीं किया गया और अंतिम रूप से जारी करने से पहले इसमें कुछ संशोधनों की संभावना बनी हुई है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज संबल योजना के तहत 600 करोड़ रुपये की राशि करेंगे वितरित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मध्यप्रदेश। मध्यप्रदेश के असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए एक बड़ी सौगात के रूप में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बुधवार को धार जिले के उमरबन में संबल

योजना के अंतर्गत अनुग्रह सहायता के 27,523 प्रकरणों में 600 करोड़ रुपये की राशि सिंगल क्लिक से वितरित करेंगे। मध्यप्रदेश के असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए एक बड़ी सौगात के रूप में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बुधवार को धार जिले के उमरबन में संबल योजना के तहत अनुग्रह सहायता के 27,523 प्रकरणों में कुल 600 करोड़ रुपये की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से वितरित करेंगे। इस अवसर पर श्रम एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल, स्थानीय जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में हितग्राही उपस्थित रहेंगे। मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना प्रदेश के असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लाखों श्रमिकों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है। योजना के अंतर्गतः दुर्घटना में मृत्यु होने पर 4 लाख रुपये, सामान्य मृत्यु पर 2 लाख रुपये, स्थायी अपंगता पर 2 लाख रुपये, आंशिक स्थायी अपंगता पर 1 लाख रुपये एवं अंत्येष्टि सहायता के रूप में 5,000 रुपये प्रदान किए जाते हैं। महिला श्रमिकों को प्रसूति सहायता के रूप में 16,000 रुपये और श्रमिकों के बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए महाविद्यालय शिक्षा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शिक्षण शुल्क की पूरी राशि राज्य सरकार वहन करती है।नीति आयोग की पहल पर राज्य सरकार ने गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स (जैसे ऑनलाइन डिलीवरी एजेंट्स आदि) को भी संबल योजना में शामिल कर उनका पंजीयन प्रारंभ किया है। इन्हें भी योजना के सभी लाभ मिल रहे हैं। संबल हितग्राहियों को खाद्यान्न पात्रता पर्ची भी प्रदान की जाती है, जिसके माध्यम से वे केंद्र और राज्य सरकार द्वारा रियायती दरों पर राशन प्राप्त करते हैं।योजना के तहत श्रमिकों को जन्म से लेकर मृत्यु तक आर्थिक सहायता सुनिश्चित की गई है।

शिक्षक बना शैतान, छात्रा बोली- ट्यूटर खेलता था 'गंदा' गेम, माननी पड़ती थी विनर की बात

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पुलिस को दी शिकायत में पीड़िता ने बताया कि उसने हाल ही में 12वीं की परीक्षा दी है। डिप्लोमा की परीक्षा की तैयारी के लिए 19 अप्रैल से बताया कि उसने हाल ही में 12वीं की परीक्षा दी है। डिप्लोमा की परीक्षा की तैयारी के लिए 19 अप्रैल से ट्यूशन पढ़ने जाने लगी। वह दसवीं में भी उससे ट्यूशन पढ़ चुकी थी। उस दौरान वे दोनों

एक गेम खेलते थे। जिसमें जीतने वाले जो भी कहता था उसे पूरा करना पड़ता था। 24 अप्रैल को आरोपी ने उसी गेम में जीत दर्जकर उसे कॉफी पिलाने और गले लगाने को कहा। जो पीड़िता को काफी खराब लगा। 26 अप्रैल को फिर गेम खेला और इस बार अश्लील हरकत करते हुए निजी अंग से छेड़छाड़ करने लगा। उसकी हरकत से वह काफी डर गई। वह तुरंत घर चली गई। उसने अपनी मां को सारी बात बताई। फिर पिता के घर आने के बाद परिजनों ने थाने में शिकायत की। जिला पुलिस उपायुक्त सचिन शर्मा ने बताया कि पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और मामले की छानबीन की जा रही है। ट्यूशन पढ़ने जाने लगी। वह दसवीं में भी उससे ट्यूशन पढ़ चुकी थी। दिल्ली के नांगलोई इलाके में डिप्लोमा की परीक्षा की तैयारी कर रही 18 साल की एक छात्रा ने ट्यूटर पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है। आरोपी उसके पिता का दोस्त है। पीड़िता की शिकायत पर नांगलोई थाना पुलिस ने दुष्कर्म का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। छात्रा परिजनों के साथ नांगलोई इलाके में रहती है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़िता ने

विदेशी छात्रों की कानूनी मान्यता खत्म करेगा ट्रंप प्रशासन; अमेरिकी सरकार ने कोर्ट को बताई पूरी योजना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। मार्च के अंत से अब तक 170 से ज्यादा यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में पढ़ रहे हजारों छात्रों के वीजा या कानूनी स्थिति को खत्म कर दिया गया था। इसे लेकर तमाम छात्रों ने अदालत में मुकदमे दायर किए हैं। इसके जवाब में सरकार ने अदालत को नई नीति की जानकारी दी। ट्रंप प्रशासन ने विदेशी छात्रों की कानूनी मान्यता को समाप्त करने का एलान किया है। हाल ही में छात्रों के वीजा रद्द किए जाने के मामलों के बाद अमेरिका सरकार ने संघीय अदालत को नई नीति की पूरी जानकारी कोर्ट को दी। मार्च के अंत से अब तक 170 से ज्यादा यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में पढ़ रहे हजारों छात्रों के वीजा या कानूनी स्थिति को खत्म कर दिया गया था। इसे लेकर तमाम छात्रों ने अदालत में मुकदमे दायर किए हैं। छात्रों का आरोप है कि उन्हें न तो कोई चेतावनी दी गई, न ही सफाई का मौका मिला। सरकार की कार्रवाई के बाद कुछ छात्र आव्रजन अधिकारियों द्वारा पकड़े जाने के डर से छिप गए या अपनी पढ़ाई छोड़कर घर लौट गए। कानूनी मान्यता रद्द करने के विरोध में अदालत पहुंचे छात्र अक्षर पटेल के मामले में अदालत में सरकार ने अपनी नई नीति की जानकारी दी। अक्षर पटेल टेक्सास में सूचना प्रणाली का अध्ययन करने वाले अंतरराष्ट्रीय छात्र हैं। पटेल की

कानूनी स्थिति इस महीने समाप्त कर दी गई थी और फिर बहाल कर दी गई। निर्वासन बचने के लिए उन्होंने प्रारंभिक अदालती फैसले की मांग की थी। कोर्ट में अधिकारियों ने कहा कि सरकार नई नीति के तहत अंतरराष्ट्रीय छात्रों की कानूनी स्थिति को बहाल कर रही है। नीति में छात्रों की कानूनी स्थिति को रद्द करने के कई कारण बताए गए हैं। इसमें उनके वीजा को रद्द करना भी शामिल है। होमलैंड सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने कहा कि उन्होंने छात्र वीजा धारकों के नामों की जांच राष्ट्रीय अपराध सूचना केंद्र से की है। यह एफबीआई का डाटाबेस है जिसमें अपराधों से संबंधित तमाम जानकारी हैं। इसमें संदिग्धों, लापता व्यक्तियों और गिरफ्तार किए गए लोगों के नाम शामिल हैं, भले ही उन पर कभी कोई अपराध का आरोप न लगाया गया हो या उन पर से आरोप हटा दिए गए हों। होमलैंड सिक्योरिटी विभाग के आंद्रे वॉटसन ने कहा कि पटेल वैध रूप से अमेरिका में मौजूद हैं। उन्हें तत्काल हिरासत में लेने या हटाने की आवश्यकता नहीं है। कोर्ट में सुनवाई के दौरान अमेरिकी जिला न्यायाधीश एना रेयेस ने कहा कि डाटाबेस सर्च में कुल मिलाकर लगभग 6,400 छात्रों की पहचान की गई। इसमें एक स्प्रेडशीट में 734 छात्रों के नाम हैं। यह स्प्रेडशीट होमलैंड सिक्योरिटी अधिकारियों को भेजी गई थी। इस पर होमलैंड सिक्योरिटी अधिकारियों ने छात्रों का कानूनी दर्जा समाप्त करने के निर्देश दिए। जज रेयेस ने कहा कि कम समय सीमा से पता चलता है कि किसी ने भी व्यक्तिगत रूप से रिकॉर्ड की समीक्षा नहीं की है ताकि पता लगाया जा सके कि छात्रों के नाम एनसीआईसी में क्यों आए? अगर कोई व्यक्ति थोड़ा भी सचेत होता तो यह सब टाला जा सकता था। उन्होंने कहा कि सरकार ने इस देश में आने वाले व्यक्तियों के प्रति चिंता की कमी दिखाई है। रेयेस ने प्रारंभिक निषेधाज्ञा जारी करने से इनकार कर दिया तथा दोनों पक्षों के वकीलों से कहा कि वे समझौता कर लें, ताकि अक्षर पटेल अमेरिका में रह सकें।सरकार की कार्रवाई का सामना कर रहे छात्रों ने नई नीति का विरोध किया है। छात्रों के वकील ब्रैड बैनियास ने कहा कि नए दिशानिर्देश आईसीई के अधिकार को पिछली नीति से कहीं अधिक विस्तृत करते हैं। अब उन्हें विदेश विभाग से वीजा रद्द करवाने और फिर उन छात्रों को निर्वासित करने की पूरी छूट मिल गई, भले ही उन्होंने कुछ भी गलत न किया हो।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री तरुण चुघ बोले- इंडी गठबंधन के साथ आईएसआई का गठजोड़ चल रहा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और जम्मू-कश्मीर के संगठन प्रभारी तरुण चुघ ने कांग्रेस पर पाकिस्तान समर्थक रुख अपनाने का गंभीर आरोप लगाया है। चुघ ने कहा कि कांग्रेस की नीतियां और सोशल मीडिया

गतिविधियां देश विरोधी मानसिकता को बढ़ावा दे रही हैं। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और जम्मू-कश्मीर के संगठन प्रभारी तरुण चुघ ने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस अब पाकिस्तान की जुबान बोल रही है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस के आधिकारिक ट्विटर हैंडल को पाकिस्तान की मीडिया और वहां के मंत्री लाइक और फॉलो कर रहे हैं, जो दर्शाता है कि कांग्रेस और पाकिस्तान के बीच गठजोड़ चल रहा है। भाजपा कार्यालय में आयोजित डॉ. भीमराव अंबेडकर सम्मान अभियान के तहत आयोजित गोष्ठी में बोलते हुए चुघ ने कहा कि कांग्रेस का तुष्टिकरण चरम पर है।

3493 मीट्रिक टन कबाड़ बेचकर रेलवे ने कमाए 14.49 करोड़, यात्री सुविधा बढ़ाने में होगा उपयोग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल ने रेलवे स्क्रैप की बिक्री से बीते वित्त वर्ष में करीब 14.49 करोड़ रुपये की कमाई की है। यह कमाई रेलवे मंडल के 3493 मीट्रिक टन स्क्रैप की बिकवाली से हुई है। उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल ने बीते वित्त वर्ष में कबाड़ की बिक्री से 14.49 करोड़ रुपये की कमाई की है। मंडल द्वारा 31 मार्च को समाप्त हुए वित्त वर्ष के दौरान 3493 मीट्रिक टन स्क्रैप का सफलतापूर्वक निपटान किया गया।जोधपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि मंडल में कबाड़ निस्तारण अभियान को एक मिशन की तरह संचालित किया गया। इसका उद्देश्य केवल राजस्व अर्जन नहीं था, बल्कि रेलवे परिसरों को स्वच्छ, सुव्यवस्थित और सुरक्षित बनाना भी था।डीआरएम त्रिपाठी ने बताया कि इस प्रक्रिया से हुई आय का उपयोग जोधपुर मंडल में यात्री सुविधाओं के विस्तार, प्रतीक्षालयों के आधुनिकीकरण, प्लेटफॉर्म विस्तार और आधुनिक सुरक्षा उपकरणों की स्थापना जैसे कार्यों में किया जाएगा। डीआरएम त्रिपाठी ने बताया कि इस प्रक्रिया से हुई आय का उपयोग जोधपुर मंडल में यात्री सुविधाओं के विस्तार, प्रतीक्षालयों के आधुनिकीकरण, प्लेटफॉर्म विस्तार और आधुनिक सुरक्षा उपकरणों की स्थापना जैसे कार्यों में किया जाएगा।स्टेशनों और रेल लाइनों के आसपास फैले स्क्रैप को हटाने से ट्रेनों की आवाजाही पहले से अधिक सुरक्षित हुई है।

पंजाब रोडवेज बस में महिला ने बच्ची को दिया जन्म, हरिद्वार से पटियाला जा रही थी बस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पंजाब रोडवेड में मंगलवार दोपहर को एक महिला ने बच्ची को जन्म दिया। यह बस हरिद्वार से पटियाला की ओर जा रही थी। डिटेल में कालका चौक के पास एक महिला ने मंगलवार दोपहर पंजाब रोडवेज की बस में बच्ची को जन्म दिया। महिला अंबाला कैंट से पंजाब रोडवेज की बस में बैठी थी। यह बस हरिद्वार से पटियाला की ओर जा रही थी। जैसे ही बस कालका चौक के पास पहुंची तो महिला को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई जिसके बाद पंजाब रोडवेज के बस चालक ने सुझ-बुझ दिखाते हुए बस को एक प्राइवेट अस्पताल में रोका और अस्पताल प्रशासन को इसकी जानकारी दी। इसी बीच अंबाला शहर नागरिक अस्पताल में एम्बुलेंस पर तैनात चालक राकेश कुमार अपनी बाइक से कहीं जा रहे थे तो उन्होंने इस पूरे मामले को समझा। राकेश कुमार ने तुरंत फोन करके इसकी सूचना नागरिक अस्पताल में दी और सरकारी एम्बुलेंस को मौके पर बुलाया। नागरिक अस्पताल के ईएमटी राजकुमार ने बस में अन्य महिलाओं की मदद से महिला की डिलीवरी करवाई जिसके बाद महिला को नागरिक अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ बताए जा रहे हैं। पंजाब रोडवेज की बस में सवार महिला व पुरुष यात्रियों ने कंधे से कंधा मिलाकर महिला का प्रसव करवाने में मदद की। एक तरफ जहां महिलाओं ने आनन-फानन में अपना पल्लू उतारकर पर्दा किया। वहीं, पुरुष यात्री भी बस से नीचे उतरकर हर संभव मदद करते रहे।

भारत अगले 24-36 घंटों में सैन्य कार्रवाई की योजना बना रहा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी। इस घटना में पाकिस्तान का हाथ होने की बात सामने आई है। भारत ने इस घटना के मद्देनजर पाकिस्तान पर एक के बाद राजनयिक और कूटनीतिक कार्रवाई जारी रखी हैं। पाकिस्तान ने बुधवार को दावा किया कि उसके पास ठविश्वसनीय खुफिया जानकारीठ है कि भारत अगले 24-36 घंटों में उसके खिलाफ सैन्य कार्रवाई की योजना बना रहा है। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार का यह बयान पीएम मोदी द्वारा शीर्ष रक्षा अधिकारियों के साथ बैठक के बाद आया है। इस बैठक में पीएम मोदी ने सशस्त्र बलों की पेशेवर क्षमता पर भरोसा जताया और कहा कि उन्हें कार्रवाई के तरीके, लक्ष्य और समय तय करने की पूरी छूट दी गई है। जानकारी के मुताबिक, पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने कहा कि भारत

सरकार पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकवादी हमले में पाकिस्तान की संलिप्तता के बारे में निराधार आरोपों के आधार पर पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करने की तैयारी कर रही है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान खुद आतंकवाद का शिकार रहा है और उसने हमेशा इसके सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की निंदा की है। उन्होंने कहा कि इस्लामाबाद ने विशेषज्ञों के एक तटस्थ आयोग द्वारा ठविश्वसनीय, पारदर्शी और स्वतंत्रठ जांच की पेशकश की है, जिससे पहलगाम हमले की हकीकत का पता लगाया जा सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को देश के शीर्ष रक्षा अधिकारियों के साथ बैठक की, जिसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और तीनों सेनाओं के प्रमुख शामिल हुए। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान भी इस बैठक का हिस्सा थे। बैठक करीब डेढ़ घंटे तक चली। सरकारी सूत्रों के अनुसार, बैठक में प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकवाद पर करारी चोट करना हमारा राष्ट्रीय संकल्प है। पीएम मोदी ने सशस्त्र बलों की पेशेवर क्षमताओं पर पूरा विश्वास और भरोसा जताया। सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री ने कहा, उन्हें (सशस्त्र बलों को) हमारी प्रतिक्रिया के तरीके, लक्ष्य और समय तय करने की पूरी स्वतंत्रता है। बीते सप्ताह पहलगाम में आतंकी हमले के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर है। इस हमले के बाद पीएम मोदी ने कहा था कि भारत आतंकवादियों और उनके समर्थकों की पहचान कर उनका पता लगाकर उन्हें दंडित करेगा। पीएम ने साफ शब्दों में चेतावनी देते हुए यह भी कहा था कि भारत पृथ्वी के आखिरी छोर तक आतंकियों को खदेड़ देगा।

बॉलीवुड/टैली मसाला

सब कुछ लुटाकर सिनेमा के पितामह बने दादासाहेब फाल्के समाज के खिलाफ जाकर महिलाओं को दिया मौका

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा की नींव रखने वाले फिल्म निर्माता दादासाहेब फाल्के की आज उनकी 155वीं जयंती है। चलिए इस मौके पर जानते हैं उनसे जुड़ी कुछ दिलचस्प बातेंसोचिए, एक ऐसा दौर जब सिनेमाघर नहीं थे, कैमरे की बात तो दूर, लोग 'मूविंग पिक्चर्स' को जादू समझते थे... तभी एक शख्स ने न सिर्फ भारत में सिनेमा को जन्म दिया, बल्कि उसे दुनिया भर में पहचान दिलाई। वह थे धुंडीराज गोविंद फाल्के, जिन्हें हम दादासाहेब फाल्के कहते हैं। आज उनकी 155वीं जयंती पर हम उस जुनूनी इंसान की कहानी सुनाने जा रहे हैं, जिन्होंने 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' बनाकर भारतीय सिनेमा की नींव रखी। पत्नी के गहने गिरवी रखकर, समाज के तानों को झेलकर और तकनीक की कमी से जूझकर उन्होंने जो सपना देखा, वह आज बॉलीवुड के रूप में चमक रहा है। चलिए जानते हैं 19 साल में 95 फीचर फिल्में और 26 शॉर्ट फिल्में बनाने वाले इस सिनेमा के जादूगर के रोचक किस्से 30 अप्रैल 1870 को महाराष्ट्र के त्र्यंबकेश्वर में एक मराठी ब्राह्मण परिवार में जन्मे दादासाहेब फाल्के का बचपन से ही कला के प्रति गहरा लगाव था। उनके पिता गोविंद सदाशिव एक संस्कृत विद्वान और पुजारी थे, जो सात बच्चों के परिवार को पालते थे। दादासाहेब ने 1885 में मुंबई के मशहूर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला लिया, जहां उन्होंने चित्रकला, फोटोग्राफी और लिथोग्राफी सीखी। बाद में बड़ौदा के कला भवन में उन्होंने मूर्तिकला,

इंजीनियरिंग, पेंटिंग और आर्किटेक्चर का अध्ययन किया।करियर की शुरुआत में दादासाहेब ने कई क्षेत्रों में हाथ आजमाया। वह बड़ौदा में पेंटर रहे, फिर गोधरा में फोटोग्राफर बने, लेकिन बाद में उन्होंने फोटोग्राफी छोड़ दी। इसके बाद वह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग में ड्राफ्ट्समैन बने, लेकिन नौकरी में मन नहीं लगा। 1908 में उन्होंने मशहूर चित्रकार राजा रवि वर्मा की लिथोग्राफी प्रेस में काम किया, जहां हिंदू देवी-देवताओं की तस्वीरों ने उन्हें गहरे प्रभावित किया। बाद में उन्होंने अपनी प्रिंटिंग प्रेस शुरू की, लेकिन साझेदारों से मतभेद के कारण वह भी बंद हो गई।दादासाहेब का जीवन तब बदला, जब 1911 में उन्होंने एक मूक फिल्म 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' देखी। यह फ्रांसीसी फिल्म उनके लिए जादू से कम नहीं थी। उन्होंने इसे बार-बार देखा और सोचा, 'अगर ईसाई धर्म की कहानियां पर्दे पर आ सकती हैं तो हिंदू देवी-देवताओं की कहानियां क्यों नहीं?' इस प्रेरणा ने उन्हें भारतीय संस्कृति को सिनेमा के जरिए दुनिया तक ले जाने का सपना दिया। उन्होंने फैसला किया कि वह भारत की पहली फीचर फिल्म बनाएंगे।हालांकि, यह सफर आसान नहीं था। उस समय भारत में फिल्म निर्माण की कोई सुविधा नहीं थी। न स्टूडियो, न प्रशिक्षित अभिनेता, न तकनीकी संसाधन। दादासाहेब ने हिम्मत नहीं हारी। 1912 में वह लंदन गए और वहां मशहूर फिल्ममेकर सेसिल हेपवर्थ से दोस्ती की और उनसे फिल्म निर्माण की बारीकियां सीखीं। उन्होंने वहां से विलियमसन कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफोरेटर और रॉ फिल्म खरीदी। भारत लौटकर उन्होंने 'फाल्के फिल्म्स कंपनी' की स्थापना की और अपनी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' पर काम शुरू किया।'राजा हरिश्चंद्र' बनाना दादासाहेब के लिए किसी युद्ध से कम नहीं था। सबसे बड़ी चुनौती थी फंडिंग। उन्होंने अपनी पत्नी सरस्वतीबाई के गहने गिरवी रखे, जीवन बीमा पॉलिसी बेची और दोस्तों से उधार लिया। फिल्म का बजट करीब 15,000 रुपये था, जो उस समय बड़ी रकम थी। दूसरी समस्या थी अभिनेताओं की। अभिनय को उस समय सम्मानजनक पेशा नहीं माना जाता था, खासकर महिलाओं के लिए। अंततः उन्हें रानी तारामती के किरदार के लिए कोई महिला नहीं मिली। मजबूरी में उन्होंने एक रेस्तरां में काम करने वाले कुक अन्ना सालुंके को तारामती की भूमिका दी।राजा हरिश्चंद्र का किरदार दत्तात्रय दामोदर दबके ने निभाया, जबकि उनके सात साल के बेटे भालचंद्र फाल्के ने उनके बेटे रोहिदास की भूमिका निभाई। दादासाहेब ने खुद स्क्रिप्ट लिखी, निर्देशन किया, सेट डिजाइन किया, मेकअप से लेकर एडिटिंग तक सब संभाला। उनकी पत्नी सरस्वतीबाई ने अभिनेताओं के कपड़े डिजाइन किए, खाना बनाया और पोस्टर तैयार किए।21 अप्रैल 1913 को 'राजा हरिश्चंद्र' का प्रीमियर मुंबई के ओलंपिया थिएटर में शहर के रईसों के लिए हुआ। 3 मई 1913 को इसे कोरोनेशन सिनेमा, गिरगांव में आम जनता के लिए रिलीज किया गया। फिल्म ने दर्शकों का दिल जीत लिया। सत्य और धर्म के लिए सब कुछ त्याग देने वाले राजा हरिश्चंद्र की कहानी ने लोगों को भावुक कर दिया। फिल्म 23 दिनों तक चली और 1914 में लंदन में भी दिखाई गई। इसकी सफलता ने साबित कर दिया कि भारत में स्वदेशी कहानियों की फिल्में चल सकती हैं।यह फिल्म भारतीय सिनेमा का मील का पत्थर बनी। कुछ इतिहासकार दादासाहेब तोरणे की 'श्री पुंडलिक' (1912) को पहली भारतीय फिल्म मानते हैं, लेकिन वह एक स्टेज प्ले की रिकॉर्डिंग थी, जबकि 'राजा हरिश्चंद्र' पूरी तरह से स्वदेशी स्क्रिप्ट और सिनेमाई तकनीक वाली फीचर फिल्म थी।

'केसरी 2' को छोड़कर बाकी फिल्मों का हाल बुरा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली।मंगलवार को बॉक्स ऑफिस पर 'केसरी 2', 'ग्राउंड जीरो' और 'जाट' की कमाई में कमी देखी गई। जानते हैं इन फिल्मों ने मंगलवार को कितना कलेक्शन किया।मंगलवार को

बॉक्स ऑफिस पर 'केसरी 2' सहित कई फिल्मों की कमाई में गिरावट आई। 'ग्राउंड जीरो' को रिलीज हुए पांच दिन हो गए, लेकिन फिल्म अभी तक कमाई के मामले में डबल डिजिट में भी नहीं पहुंच पाई है। वहीं, सोमवार से जाट भी लाखों में कमाई कर रही है। जानते हैं इन फिल्मों ने मंगलवार को बॉक्स ऑफिस से कितना कलेक्शन किया मंगलवार को अक्षय कुमार की फिल्म 'केसरी 2' की कमाई में गिरावट दर्ज हुई। फिल्म ने 2.50 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। वहीं, सोमवार को यह कलेक्शन 2.75 करोड़ रुपये था। वीकएंड के बाद भी फिल्म की कमाई में 66 प्रतिशत की गिरावट आई थी। 'केसरी 2' का कुल कलेक्शन'केसरी 2' के कुल कलेक्शन की बात की जाए तो फिल्म ने अब तक 70.65 करोड़ रुपये बॉक्स ऑफिस से जुटाए हैं। फिल्म ने ओपनिंग डे पर 7.75 करोड़ के साथ अपनी शुरुआत की थी। 'केसरी 2' का बजट लगभग 150 करोड़ रुपये बताया जा रहा है।इमरान हाशमी की फिल्म 'ग्राउंड जीरो' से काफी उम्मीदें थीं। फिल्म ने 25 अप्रैल को सिनेमाघरों में दस्तक दिया। इसे रिलीज हुए पांच दिन हो चुके हैं, लेकिन अब तक कमाई के मामले में डबल डिजिट का आंकडे को भी नहीं छुआ है। मंगलवार को फिल्म ने बॉक्स ऑफिस से 71 लाख रुपये का कलेक्शन किया है।फिल्म की कुल कमाई के बारे में बात करे तो दुर्दांत आतंकवादी 'गाजी बाबा' के खात्मे पर आधारित इस फिल्म ने 6.54 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। इमरान हाशमी के अलावा फिल्म में साई तम्हणकर, जोया हुसैन, मुकेश तिवारी, रॉकी रैना जैसे कलाकार शामिल हैं।

'पुष्पा 2 ' भगदड़ हादसे में घायल हुआ श्रीतेज न्यूरो रिहैब सेंटर में भर्ती, अस्पताल ने जारी किया बयान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली।पिछले साल अभिनेता अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा 2' के प्रीमियर के दौरान हुए भगदड़ हादसे में घायल आठ साल के श्रीतेज को मंगलवार को हैदराबाद

के एक निजी अस्पताल से न्यूरो रिहैबिलिटेशन सेंटर में शिफ्ट किया गया।पिछले साल अभिनेता अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा 2' के प्रीमियर के दौरान हुए भगदड़ हादसे में घायल आठ साल के श्रीतेज को मंगलवार को हैदराबाद के एक निजी अस्पताल से न्यूरो रिहैबिलिटेशन सेंटर में शिफ्ट किया गया। श्रीतेज का इलाज सिकंदराबाद के अस्पताल में चल रहा था। अस्पताल के मुताबिक, श्रीतेज अब मुंह से खाना खा रहा है और उसे ऑक्सीजन या रेस्पिरेटरी सपोर्ट की जरूरत नहीं है। 4 दिसंबर 2024 को हैदराबाद के एक थिएटर में 'पुष्पा 2' के प्रीमियर के दौरान भगदड़ मच गई थी। इस हादसे में श्रीतेज गंभीर रूप से घायल हो गया था। पुलिस और आसपास के लोगों ने मौके पर ही उसे सीपीआर देकर बचाने की कोशिश की, जिसके बाद उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों के अनुसार, श्रीतेज की याददाश्त पर असर पड़ा था और उसकी हालत नाजुक थी। पिछले चार महीनों से वह अस्पताल में इलाजरत था। अब उसकी हालत में सुधार देखकर उसे न्यूरो रिहैब सेंटर में भेजा गया है, जहां उसकी रिकवरी के लिए विशेष देखभाल की जाएगी।इस हादसे ने श्रीतेज के परिवार को गहरा सदमा पहुंचाया। भगदड़ में उसकी मां की जान चली गई, जिसके बाद श्रीतेज और उसके परिवार के लिए यह समय बेहद मुश्किल भरा रहा। इस हादसे ने न सिर्फ श्रीतेज के जीवन को प्रभावित किया, बल्कि फिल्म इंडस्ट्री और फैंस के बीच भी हलचल मचा दी। अस्पताल के डॉक्टरों का कहना है कि श्रीतेज की हालत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। न्यूरो रिहैब सेंटर में उसकी रिकवरी के लिए विशेषज्ञों की देखरेख में इलाज होगा।हादसे के बाद अल्लू अर्जुन और 'पुष्पा 2' की टीम ने श्रीतेज के परिवार की मदद के लिए दो करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता दी। अल्लू अर्जुन ने इस घटना पर दुख जताते हुए परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की थी। इसके अलावा, तेलंगाना सरकार ने भी श्रीतेज के परिवार को आर्थिक मदद देने की घोषणा की थी।इस हादसे के सिलसिले में अल्लू अर्जुन को 13 दिसंबर 2024 को गिरफ्तार किया गया था। हालांकि, अगले ही दिन तेलंगाना हाई कोर्ट ने उन्हें अंतरिम जमानत दे दी। बाद में उन्हें नियमित जमानत भी मिल गई। इस मामले ने फिल्म की रिलीज के दौरान सुरक्षा व्यवस्था पर कई सवाल खड़े किए थे।

रेड 2 की टीम ने इंडस्ट्री की मौजूदा स्थिति पर की खुलकर बात, बताया- सफल फिल्मों के लिए क्या है जरूरी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। रेड 2 की टीम ने हाल ही में एक बातचीत में फिल्म इंडस्ट्री की मौजूदा स्थिति पर खुलकर बात की। इस दौरान उन्होंने फिल्मों की

सफलता के लिए कुछ जरूरी बातें भी बताईं।'रेड 2' इस गुरुवार को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। अजय देवगन और रितेश देशमुख की बहुप्रतीक्षित फिल्म का निर्देशन राजकुमार गुप्ता ने किया है। इस फिल्म की रिलीज से पहले निर्माता भूषण कुमार, कुमार मंगत पाठक और अभिषेक पाठक ने एएनआई के साथ एक खास बातचीत की। इस दौरान उन्होंने न सिर्फ अपनी फिल्म के बारे में बताया, बल्कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की मौजूदा चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर भी खुलकर चर्चा की। भूषण कुमार ने कहा कि कोविड महामारी ने सिनेमाघरों की रौनक को काफी प्रभावित किया। कोविड के बाद ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने लोगों का मनोरंजन घर तक पहुंचाया। जब दर्शक थिएटर में लौटे तो कई बार फिल्मों की कहानी या कंटेंट उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा, लेकिन अब हालात बदल रहे हैं। 'जाट', 'छावा', 'केसरी 2' और 'डिप्लोमैट' जैसी फिल्मों ने सिनेमाघरों में कामयाबी हासिल की। अब 'रेड 2' के साथ हम दर्शकों को फिर से थिएटर तक लाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि फिल्में बनाते समय दर्शकों की पसंद को समझना जरूरी है। इससे न सिर्फ सिनेमाघरों में भीड़ बढ़ेगी, बल्कि पूरी इंडस्ट्री को फायदा होगा। निर्माता कुमार मंगत पाठक ने साफ शब्दों में कहा, कहानी अच्छी हो तो फिल्म जरूर चलती है।ठ उनका मानना है कि सिनेमाघरों को फिर से जीवंत करने का सबसे बड़ा हथियार ऐसी फिल्में हैं जो दर्शकों के दिल को छू सकें। इस बातचीत में अभिषेक पाठक ने फिल्म निर्माण के बजट को लेकर चिंता जताई। उन्होंने कहा, कई बार फिल्म का बजट बेकाबू हो जाता है। उदाहरण के लिए कुछ अभिनेताओं या अभिनेत्रियों के मेकअप आर्टिस्ट और हेयर स्टाइलिस्ट को प्रति दिन दो से पांच लाख रुपये तक मिलते हैं जो कई बार हमारे तकनीशियनों की फीस से भी ज्यादा होता है। हर किसी का योगदान बराबर है, लेकिन बजट में संतुलन और निष्पक्षता लाने की जरूरत है।ङ्क अभिषेक का सुझाव है कि अगर लागत पर नियंत्रण हो, तो अच्छी फिल्में कम खर्च में बनाई जा सकती हैं, जिससे इंडस्ट्री को भी फायदा होगा। रेड 2' में अजय देवगन और रितेश देशमुख के साथ वाणी कपूर भी एक अहम किरदार में नजर आएंगी। फिल्म में अजय आयकर अधिकारी अमय पटनायक के रूप में एक बार फिर से नजर आने वाले हैं। हाल ही में इस फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया था, जिसे देखकर दर्शकों की उत्सुकता काफी ज्यादा बढ़ गई है। यह फिल्म कल यानी 1 मई, 2025 को रिलीज होगी।

पहले हफ्ते के भीतर लाखों में सिमटी 'ग्राउंड जीरो', पांचवें दिन फिल्म ने की इतनी कमाई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। इमरान हाशमी की फिल्म 'ग्राउंड जीरो' का आज बॉक्स ऑफिस पर पांचवां दिन था। आज भी फिल्म की कमाई में गिरावट दर्ज

की गई। आइए जानते हैं फिल्म ने अब तक कितना कलेक्शन किया। इमरान हाशमी की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'ग्राउंड जीरो' 25 अप्रैल 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। दर्शकों और निर्माताओं को फिल्म से कमाई के मामले में काफी उम्मीदें थीं, लेकिन यह उस तरह प्रदर्शन नहीं कर पाई। फिल्म की कमाई पहले हफ्ते के अंदर ही लाखों रुपये में सिमट गई है। आज की कमाई भी सामने आ चुकी है। चलिए जानते हैं कि मंगलवार को फिल्म ने कितना कलेक्शन किया। इमरान हाशमी की 'ग्राउंड जीरो' का बॉक्स ऑफिस पर आज पहला मंगलवार था। फिल्म की कमाई में बीते दिन के मुकाबले गिरावट दर्ज की गई है। खबर लिखे जाने तक फिल्म ने पांचवें दिन 57 लाख रुपये का कलेक्शन किया था। वहीं, बीते दिन यानी सोमवार को फिल्म ने 63 लाख रुपये की कमाई की थी।वहीं, फिल्म की कुल कमाई की बात करें तो अब यह तक 6.4 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर चुकी है। पहले हफ्ते में ही फिल्म दम तोड़ चुकी है, ऐसे में अब इसकी उम्मीद कम ही है कि फिल्म अगले हफ्ते कुछ बेहतर प्रदर्शन कर सके। रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म का बजट 50 करोड़ रुपये है और यह अब तक 10 करोड़ रुपये का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई है।'ग्राउंड जीरो' सिनेमाघरों में सनी देओल की फिल्म 'जाट' और अक्षय कुमार की 'केसरी 2' के साथ भी मुकाबला कर रही है, जिसका असर इसकी कमाई पर भी दिख रहा है। 'जाट' और 'केसरी 2' अच्छा प्रदर्शन कर रही है, इस बीच 'ग्राउंड जीरो' कहीं दब सी गई है।'ग्राउंड जीरो' 2001 के भारतीय संसद हमले के बाद की घटनाओं पर आधारित एक एक्शन थ्रिलर फिल्म है। फिल्म में इमरान ने बीएसएफ कमांडेंट नरेंद्र नाथ धर दुबे की भूमिका निभाई है।

साउथ के फैन की जबरदस्त दीवानगी, बर्थडे पर बना डाला सामंथा का मंदिर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली।साउथ में एक्टर्स, एक्ट्रेसेस को लेकर फैंस के बीच दीवानगी देखी जाती है। हाल ही में एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें एक्ट्रेस सामंथा के नाम का मंदिर आंध्र प्रदेश में बना हुआ दिख रहा है। कल यानी 28 अप्रैल को एक्ट्रेस सामंथा रूथ ने अपना जन्मदिन मनाया। फैंस ने भी सामंथा का जन्मदिन अलग-अलग ढंग से सेलिब्रेट किया। इसी बीच एक वीडियो भी वायरल हुआ, जिसमें सामंथा के एक फैन द्वारा बनाया गया एक्ट्रेस का मंदिर चर्चा में आ गया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (ट्विटर) पर एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें एक्ट्रेस सामंथा का मंदिर दिख रहा है। इसी मंदिर में फैन ने एक्ट्रेस का 38वां जन्मदिन मनाया। वीडियो में दिख रहा है कि मंदिर के बाहर लिखा है, 'सामंथा का मंदिर'। अंदर जाने पर सामंथा की दो प्रतिमाएं दिखती हैं, इसमें से एक सुनहरे रंग की है।फैन ने सिर्फ एक्ट्रेस का मंदिर ही नहीं बनवाया है, इसके अलावा अनाथ बच्चों को पार्टी दी। अनाथ बच्चों के साथ सामंथा के बर्थ डे का केक भी काटा। जिस फैन ने यह मंदिर बनवाया है, उसका नाम तेनाली संदीप है। मीडिया से भी इस फैन ने बातचीत की। तेनाली कहता है, 'मैं आंध्र प्रदेश से हूं। मैं सामंथा का बहुत बड़ा फैन हूं। पिछले तीन सालों से उनका जन्मदिन मना रहा हूं। मैंने कुछ साल पहले ही यह मंदिर भी बनवाया था। हर साल मैं यह तय करता हूं कि सामंथा के जन्मदिन पर बच्चो को खाना खिलाऊं और केक काटूं। सामंथा ने मुझे बहुत इंस्पायर किया है।' एक्ट्रेस सामंथा के करियर फ्रंट की बात करें तो पिछले साल वह एक वेब सीरीज 'सिटाडेल हनी बनी' में दिखीं, इसमें वरुण धवन भी थे। वह एक वेब सीरीज 'रक्त ब्रह्मांड' भी कर रही हैं। बतौर प्रोड्यूसर भी सामंथा की एक फिल्म इस साल रिलीज होगी।

30 साल पहले कौन सी हरकत के लिए गेरी ने डेमी मूर से माफी मांगी, जवाब में एक्ट्रेस ने क्या कहा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। हाल ही में हॉलीवुड एक्टर गेरी ओल्डमैन ने एक पुराना किस्सा साझा किया। 30 साल पहले फिल्म 'द स्कारलेट लेटर' के सेट पर गेरी ने डेमी मूर के साथ ऐसा व्यवहार किया, जिसके लिए वह शर्मिंदा भी हुए। इसके लिए एक्ट्रेस से माफी भी मांगी। साल 1995 में एक हॉलीवुड फिल्म रिलीज हुई 'द स्कारलेट लेटर'। इस फिल्म में गेरी ओल्डमैन और डेमी मूर ने लीड रोल किए थे। यह फिल्म इसी नाम के चर्चित नॉवेल पर बेस्ड थी। इस फिल्म के सेट पर डेमी के साथ गेरी ओल्डमैन ने काफी खराब व्यवहार किया था। हाल ही में रेडियो टाइम्स को दिए गए एक इंटरव्यू में गेरी ओल्डमैन बताते हैं, 'मैं उस समय शराब का आदी था और बहुत बुरे दौर से गुजर रहा था। मैं लंच टाइम पर खूब सारी शराब पी लेता था। इसके बाद सेट पर आकर सीन शूट करता था। अगले दिन मुझे अहसास होता कि जो किया वो गलत था। ऐसे में मैंने डेमी मूर से माफी मांगी। मैंने डेमी से कहा कि शायद तुम मुझसे नफरत करती होगी, मुझे माफ कर दो। इस पर डेमी का जवाब था, 'मैं तुमसे नफरत नहीं करती हूं, बस तुम्हारी हालत देखकर निराश हूं।गेरी बताते हैं कि साल 1997 शराब पीने की आदत के कारण वह मरने के कगार पर पहुंच गए थे। इसके बाद उन्होंने शराब पीना छोड़ दिया। अब वह एक घूंट भी शराब का नहीं लेते हैं। गेरी कहते हैं, 'शराब छोड़ने के बाद जिंदगी और करियर दोनों बदल गए। तीन बार ऑस्कर के लिए नॉमिनेशन हुआ। 'द डार्केस्ट ऑवर' में विंस्टन चर्चिल के रोल के लिए साल 2018 में बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड मिला।

स्वात्वाधिसकसार एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0-09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोट- इस समाचार पत्र मे प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हंतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।